नियम (सिद्धान्त)
Conons of Dort

नीदर लैण्ड में पाँच मुख्य सिद्धान्त के मतभेद के विषय में Dort के Synod के निर्णय को Dort के नाम से जाना जाता है। यह Dort की Synod जो Dordrent शहर में 1618-19 में इकट्ठी हुई के सिद्धान्तो के कथन (घोषणा) पर बनायी गयी। यद्यपि यह नीदरलैण्ड की राष्ट्रीय Synod थी परन्तु इसमें सिर्फ Dutch प्रतिनिधि ही नही वरन् 26 देशों के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

Dort की Synod डच कलीसिया में Jacab Arminius द्वारा शुरू विवाद को सुलझाने के लिए हुयी, Arminius के पीछे चलने वालो ने उसकी मृत्यु के पश्चात-चुनाव विश्वास पर आधारित, सबका प्रायश्चित, पूरा विनाश मे न जाना, अनुग्रह जिसे रोका जा सके, और अनुग्रह से गिरने की संभावना, की शिक्षा दी। Dort की Synod ने इन्हें अस्वीकार किया और संशोधित सिद्धान्तों को स्थापित किया जो मुख्यत: है।

बिना शर्त के चुनाव (Unconditional election)
सीमित लोगों के लिए प्रायश्चित (Limited Atonement)
पूर्ण अयोग्यता (Total Depravity)
अप्रतिरोधक अनुग्रह (Irresistible grace)
संतों की दृढ़ता (Perseverance of Saints)

ये नियम सभी सिद्धान्तों को सम्बोधित नही करते वरन् उन पांच सिद्धान्तों को ही जो विवाद का विषय थे।

●

सिद्धान्त (शिक्षा) का पहला मुख्य विषय ईश्वरीय चुनाव और अस्वीकरण

लेख-1

लोगो को दोषी ठहराने का परमेश्वर का अधिकार

जबकि सबने आदम में पाप किया और अनन्त मृत्यु के लिये श्रापित हुए/किये गये। यदि परमेश्वर पूरी मानव जाति को पाप और उसके श्राप में छोड़ कर उनके पाप के लिए उन्हें दोषी ठहराया होता परमेश्वर ने कुछ भी गलत नही किया होता ।

जैसा प्रेरित कहते है, ''समस्त संसार परमेश्वर को लेखा देने वाला ठहरे'' रोमि-3:19, ''सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है'' रोमि-3:23, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।'' रोमि-6:23

लेख-2

परमेश्वर के प्रेम का प्रगटीकरण

लेकिन परमेश्वर ने अपने प्रेम को इस प्रकार प्रगट किया कि उसने अपने इकलौते प्रिय पुत्र को संसार में भेज दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाएं।

लेख-3

सुसमाचार का प्रचार करना

परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में ऐसे प्रचारको को भेजा जो इस आनन्द के संदेश को लोगो के पास पहुचाएं, जिन्हे परमेश्वर चाहता है। ताकि वे विश्वास में आ जाए। इस सेवा के द्वारा लोग पश्चाताप और क्रूस पर चढ़ाए गये यीशु पर विश्वास में बुलाए गये। धर्मशास्त्र कहता है, ''वे उसे क्यों पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास ही नहीं किया? और वे उस पर विश्वास कैसे करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना ही नहीं? भला वे प्रचारक के बिना कैसे सुनेंगे? और वे प्रचार कैसे करेंगे जब तक कि उन्हें भेजा न जाए?

रोमि-10:14-15

लेख-4

सुसमाचार को दो प्रति उत्तर

जो सुसमाचार पर विश्वास नही करते परमेश्वर का क्रोध उन पर बना रहता है। लेकिन जो सच्चे और जीवित विश्वास के द्वारा, यीशु उद्धार कर्ता को स्वीकार करके

अपना लेते है। उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध और नाश होने से बच जाते है। और अनन्त जीवन के उपहार को पाते है।

लेख-5

अविश्वास और विश्वास का स्त्रोत

अविश्वास और दूसरे सभी पापो का कारण किसी भी तरह परमेश्वर नही, स्वयं मनुष्य है। लेकिन, यीशु मसीह में विश्वास और उसके द्वारा उद्धार परमेश्वर के द्वारा मुफ्त उपहार है। जैसाकि धर्मशास्त्र कहता। ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है। और यह तुम्हारी और से नही वरन परमेश्वर का दान है'' इफि- 2:8। ''तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ कि तुम मसीह पर विश्वास करो''-फिल-1:29

लेख-6

परमेश्वर का अनन्त कालीन निर्णय

परमेश्वर के अनन्त कालीन निर्णय के द्वारा, कुछ परमेश्वर द्वारा विश्वास के उपहार को प्राप्त करते है। और कुछ इसे स्वीकार नही करते। धर्मशास्त्र कहता है:-उसके सभी कार्यों को परमेश्वर अनन्त काल से ही जानता है।-Acts-15:18 इफि-1:11 अपने निर्णय के अनुसार परमेश्वर अनुग्रह से अपने चुने हुए के हृदयों को खोलता, तैयार करता है, कि वे विश्वास करे-लेकिन अपने सच्चे सही धार्मिक न्याय मे जो चुने हुए नहीं है। उनके हृदय की कठोरता मे उन्हे उनके पाप में छोड़ देता है। इसके द्वारा, हमारी समझ से बाहर अपने कार्य को प्रगट करता है। वह जितना दयालु-उतना न्याय संगत- पूरे खोये हुयों के बीच मे अन्तर दिखाता है।

यह परमेश्वर के वचन मे अच्छी तरह प्रगट हुआ, चुनाव और Reprobation (अस्वीकरण) का निर्णय है।

यह निर्णय कि अधर्मी-अपवित्र अपनी नाश का कारण स्वयं है, लेकिन पवित्र और परमेश्वर का भय मानने वाली आत्माओं को ऐसी तसल्ली जो शब्दों में नहीं कही जा सकती, प्रदान करता है।

लेख-7

चुनावः-परमेश्वर का न बदलने वाला उद्देश्य जिसके द्वारा वह अग्रलिखित बाते करता है

संसार की उत्पत्ति से पहले अनुग्रह के द्वारा अपनी भली स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार

पूरी मानव जाति में से जो अपनी गलती के कारण पवित्रता से गिर कर पाप मे चली गई, परमेश्वर ने पूरी मानव जाति में से कुछ लोगो को यीशु मसीह मे उद्धार के लिए चुन लिया। जिन्हे उसने चुना ऐसा नही कि वे अच्छे थे या दूसरो से ज्यादा लायक थे-परन्तु सभी मे सामान्य दु:ख थे, उसने मसीह में ऐसा किया, जिसे उसने अनन्त काल से बिचवइया चुने हुओं का मुखिया, सिर और उनके उद्धार की बुनियाद ठहराया।

और उसने निर्णय किया कि चुनों हुओं को यीशु मसीह को उद्धार के लिए दे, और वचन ओर आत्मा के द्वारा प्रभावशाली रूप से बुलाया और मसीह की संगति में शामिल किया। दूसरे शब्दो में:- परमेश्वर ने उनका न्याय और पवित्र करने के लिए मसीह मे सच्चा विश्वास देने का निर्णय किया, और अपने बेटे की संगति में बचाकर रखने के द्वारा उनकी महिमा की। परमेश्वर ने ऐसा करके अपनी दया को प्रगट किया ताकि उसकी महिमायुक्त अनुग्रह की स्तुति हो।

जैसी की धर्मशास्त्र कहता है, ''उसने हमे जगत की उत्पति से पूर्व मसीह मे चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम मे पवित्र और निर्दोष ठहरे, उसने हमें अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार पहिले से ही अपने लिये यीशु मसीह के द्वारा लेपालक पुत्र होने के लिए ठहराया, कि उसके उसे अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें उस अति प्रिय में सेंत मेत दिए है।'' इफि-1:4-6

फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हे बुलाया भी ओर जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी भी ठहराया और जिन्हे धर्मी ठहराया उन्हे महिमा भी दी है। रोमि-8:30

लेख-8

चुनाव का एक मात्र निर्णय

चुनाव कई प्रकार का नहीं है-जो पुराने नियम और नये-नियम मे उद्धार प्राप्त करते है। सभी का चुनाव एक, और एक जैसा है। धर्मशास्त्र कहता है, कि परमेश्वर की एक ही भली उद्देश्य और योजना है जिसमें उसने हमे अनुग्रह और महिमा उद्धार और उद्धार के मार्ग के लिए अनन्त काल से चुन लिया, जिसे उसने पहले से तैयार किया कि हम उस पर चले।

लेख-9

चुनाव, दिखने वाले विश्वास पर आधारित नही

चुनाव विश्वास, विश्वास की आज्ञाकारिता, पवित्रता और अन्य कोई अच्छे गुण पर आधारित नही है। यद्यपि यह मनुष्य की पूर्व अपेक्षित स्थिति पर चुनाव विश्वास, विश्वास

की आज्ञाकारिता, पवित्रता के लिए किया गया। उद्धार के सभी फायदों का स्रोत चुनाव है। विश्वास पवित्रता, और अन्य सभी उद्धार के उपहार, और अनन्त काल का जीवन चुनाव का प्रतिफल और प्रभाव है। प्रेरित कहते है, उसने हमें इसलिये चुना कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हो। इफि-1:14,

लेख-10

चुनाव परमेश्वर की भली इच्छा पर आधारित है।

चुनाव जो हमारा अधिकार नही, का कारण सिर्फ परमेश्वर की भली इच्छा पर आधारित है। परमेश्वर के चुनाव में मनुष्य के कोई गुण, भले कार्य, उद्धार के जरूरी हो शामिल नहीं है। लेकिन सभी पापियों में जो एक समान है। परमेश्वर ने कुछ लोगो को चुन लिया-गोद ले लिया कि वे उसके अपने हो।

जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है।

यद्यपि अब तक न तो जुड़वा जन्मे थे न कुछ भला या बुरा किया था इस अभिप्राय से कि परमेश्वर द्वारा चुनने के उद्धेश्य कर्म के कारण नही वरन् बुलाने वाले के कारण स्थिर रहे, उससे यह कहा गया था ज्येष्ठ पुत्र छोटे की सेवा करेगाा, जैसा लिखा है ''याकूब से मैने प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जाना'' - रोमि-9:11-13

''जब तुझे गैर यहूदियो के लिये ज्योति ठहराया है कि पुथ्वी को छोर तक का उद्धार का कराण हो, जब गैरयहूदियों ने यह सुना तो वे आनन्दित होने तथा प्रभु के वचन की प्रशंसा करने लगे और जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गये थे उन्होने विश्वास किया-प्रेरितो के काम 13:47-48

लेख-11

न बदलने वाला चुनाव

जैसे कि परमेश्वर सर्वबुद्धिमान, न बदलने वाला, सब कुछ जानने वाला, सर्वसामर्थी है, उसी प्रकार उसका चुनाव त्यागा, उसमे फेरबदल और समाप्त नही किया जा सकता, और न ही उसके चुने हुओं का छोड़ा जा सकता है। और न ही उनकी संख्या कम की जा सकती है।

लेख-12

चुनाव का आश्वासन

अनन्त और न बदलने वाले उद्धार के चुनाव का आश्वासन चुने हुओं लोगो को समय-समय पर अलग-अलग प्रकार से होता है। ये आश्वासन परमेश्वर के छिपे हुए और गहरे भेदो को समझ कर नहीं, परन्तु अपने आप को जानकार होता है। आत्मिक आनन्द

और पवित्र खुशी के साथ चुनाव के प्रतिफल, परमेश्वर के वचन के अनुसार अनुभव होते है-यीशु मसीह पर सच्चा विश्वास, बच्चे के समान परमेश्वर का भय, पाप का दुःख, धार्मिकता की भूख और प्यास है।

लेख-13.

आश्वासन का प्रतिफल

परमेश्वर की सन्तान रोजना/प्रतिदिन- चुनाव की जानकारी और आश्वासन में अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख नम्रता/दीनता से प्रस्तुत करते है। परमेश्वर का दया जो समझ से बाहर है। उसकी प्रशंसा करते है। और परमेश्वर जिसने पहले उन्हे प्रेम किया, उससे प्रेम करते है। इसका यद्यपि मतलब नहीं है। कि चुनाव की यह शिक्षा परमेश्वर के सन्तानों को उसकी आज्ञा के प्रति आलसी अथवा स्वंय आश्वस्त करती है। परमेश्वर के उचित न्यायद्वारा ऐसा उनमे होता है जो परमेश्वर के अनुग्रह को अन्यथा लेते है और इसके विषय में अनुचित बात करते और चुनें हुओं के मार्ग के अनुसार नही चलते।

लेख-14

चुनाव की सही शिक्षा

परमेश्वर की उचित योजना के अनुसार जिस प्रकार ईश्वरीय चुनाव की शिक्षा भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, यीशु मसीह और प्ररितों के द्वारा पुराने और नये नियम में सिखायी गयी और पवित्र शास्त्र में लिखी गयी। आज भी परमेश्वर की कलीसियों में आत्मा की समझ के द्वारा, यह शिक्षा पूरी पवित्रता और सच्चाई के साथ, परमेश्वर के मार्गों की सिखानी है यह परमेश्वर की पवित्र नाम की महिमा और उसके लोगो की तसल्ली के लिये होनी चाहिए।

लेख-15

परमेश्वर का वचन हमारे अनन्त और अनुग्रह के चुनाव को और ज्यादा प्रस्तुत करता

जिसमे पवित्र शास्त्र सिखाता है। कि सभी लोग चुने नही गये है। परमेश्वर के अनन्त चुनाव में कुछ लोग नही चुने गये-जिनके बारे मे परमेश्वर ने अपनी स्वतन्त्र, सर्व उचित, न बदलने वाली भली इच्छा में अग्रलिखित निर्णय लिया-

अपनी गलती और पाप के द्वारा जिस दुःख मे वे गये उन्हें छोड़ दिया,

उन्हें उद्धार का विश्वास और परिवर्तन का अनुग्रह नहीं दिया।

अन्ततः उनके हाल पर छोड़कर अपने उचित न्याय के द्वारा दोषी ठहराया और अनन्त कालीन दण्ड दिया-सिर्फ उनके अविश्वास के लिए नही वरन् अन्य सभी पापों के लिए इसके द्वारा उसने अपने न्याय को प्रगट किया।

यह अस्वीकरण (reprobation) का निर्णय है- जो परमेश्वर को पाप का जन्मदाता नही बनाता, लेकिन यह भययोग्य, irreprochable उचित न्याय और बदला है।

लेख-16.

अस्वीकरण (Reprobation) की शिक्षा को प्रतिउत्तर

जिन्होंनें अपने आप में अभी तक मसीह मे जीवित विश्वास, ह्रदय में दृढ़ भरोसा, मन में शान्ति, बच्चे की तरह आज्ञाकारिता का बोझ और मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा का अनुभव नही किया है। लेकिन ऐसे साधनों में बने है। जिनके द्वारा परमेश्वर इन बातों को हमारे जीवन मे करता है। ऐसे लोगों को अस्वीकरण (Reprobation) के नाम से चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। न ही वे अस्वीकृत (Reprobate) है। उन्हें लगातार खुशी से इन बातों में बने रहना हैं। भरपूरी के अनुग्रह की इच्छा में बने रहे और दीनता और आदर से उसका इन्तजार करते रहना हैं। दूसरी तरफ जो गम्भीरता से परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहते है। उसे खुश रखना चाहते है। और मृत्यु के शरीर से छुटकारा चाहते है। लेकिन परमेश्वर के मार्ग, विश्वास में ऐसा करने में सफल नहीं होते-ऐसे लोगो को भी नाश होने की शिक्षा से डरने की आवश्यकता नहीं हैं। क्योकि दयालु परमेश्वर ने वादा किया हैं कि वह कमजोर को अलग नहीं करेगा और कमजोर को तोड़ेगा नहीं।

लेकिन वे लोग जिन्होंने परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु को भुला दिया हैं। और अपने आपको पूरी रीति से संसार और शरीर की लालसाओं में सौप दिया हैं। ऐसे लोग जब तक गम्भीरता से परमेश्वर की ओर नही मुड़ते उनके पास नाश होने की शिक्षा से डरने के लिए हर कारण हैं।

लेख-17

विश्वासियों के बच्चों का उद्धार

परमेश्वर के वचन से हम परमेश्वर की इच्छा जानते है। जिससे हम जानते हैं कि विश्वासियों के बच्चे पवित्र है, स्वाभाव से नही परन्तु अनुग्रह की उस वाचा से जिसमें वे अपने माता-पिता के साथ शामिल हैं। इसलिए परमेश्वर का भय मानने वालो माता-पिता को अपने बच्चों के उद्धार और चुनाव के बारे में कोई शक नहीं करना चाहिए। जिन्हे परमश्ेवर ने बाल्यवस्था में बुलाया है।

लेख-18

चुनाव और अस्वीकरण की तरफ उचित रूख/व्यवहार

जो चुनाव के अनुग्रह और अस्वीकरण के दु:ख के विषय में शिकायत करते हैं। उन्हें हम प्रेरित के शब्दों में जवाब देते है। ''इसके विपरीत है मनुष्य तू कौन है, जो परमेश्वर से प्रतिवाद करता हैं। क्या गढ़ी हुयी वस्तु गढ़ने वाले से यह कहेगी कि तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया। रोमि-9:2 ''क्या मेरे लिये उचित नही कि जो मेरा उदार होना तेरी आंखों में खटकता हैं'' मत्ती-20:15

हम फिर भी आदर के साथ इन रहस्य की बातों में प्रेरितों के साथ पुकारते हैं। ''अहा! परमेश्वर का धन बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध है उसके विचार जैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे अगम्य है, क्योंकि प्रभु के मन को किसने जाना है, अथवा उसका परामर्श दाता कौन हुआ अथवा किसने उसे सर्वप्रथम कुछ दिया है जो उसे लौटा दिया जाए। क्योंकि उसी की ओर से उसी के द्वारा जो उसी के लिए सब कुछ है उसी की महिमा युगानगुग होती रहे आमीन।'' रोमि-11:33-36

गलत शिक्षाओं का विरोध-अस्वीकारना जिसने डच कलीसिया को कुछ समय तक परेशान किया जबकि चुनाव और अस्वीकारण परम्परागत शिक्षा को समझ चुके है। Synod गलत शिक्षाओं को अस्वीकार करती है।

I

वे जो ये शिक्षा देते हैं, कि परमेश्वर उन्हें ही बचाएगा जो विश्वास करेंगें और विश्वास में सुरक्षित रहेगे और विश्वास की आज्ञाकारिता में ही चुनाव और उद्धार का निर्णय निहित है। इसके सिवा कुछ भी चुनाव और अस्वीकरण के बारे में परमेश्वर के वचन में प्रगट नहीं किया गया है।

ऐसे लोग पवित्र शास्त्र की शिक्षा का विरोध करते है। कि परमेश्वर सिर्फ उन्हें ही नहीं बचाता जो विश्वास करते हैं। परन्तु उसने अनन्त काल से कुछ लोगों को चुना है। दूसरों की अपेक्षा इन्हें समय पर मसीह में विश्वास और सुरक्षा देगा।

जैसा पवित्र शास्त्र कहता, ''मैने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया हैं जिन्हें तू ने जगत में से मुझें दिया हैं वह सब तेरी ओर से है।'' यूहन्ना-17:6

''जब गैर यहूदियों ने यह सुना तो वे आनन्दित होने तथा प्रभु के वचन की प्रशंसा करने लगे और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे उन्होंने विश्वास किया'' प्रे.13:48

''उसने हमे जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हो'' इफि-1: 4

II

गलत शिक्षा

जो यह शिक्षा देते है। कि परमेश्वर का चुनाव कई प्रकार का है। **पहला**-साधारण और अस्पष्ट चुनाव, **दूसरा**-विशेष और स्पष्ट चुनाव सम्पूर्ण नही, बदलनेवाला, जो अनिवार्य नही और Conditional शर्त पर वाला चुनाव है। अन्यथा पूर्ण, बदलने वाला नही अनिवार्य और सम्पूर्ण हैं।

इस प्रकार गलत शिक्षा जो सिखाती है। एक विश्वास का चुनाव है। दूसरा उद्धार के लिए इस प्रकार उद्धार के अनिवार्य चुनाव के अलावा एक और चुनाव है। जिसके द्वारा बचाने वाला विश्वास प्राप्त होता है,

ये गलत शिक्षा परमेश्वर के वचन से अलग मनुष्य दिमाग की उपज है। जो चुनाव की शिक्षा बदल देती है। और उद्धार की कड़ी को तोड़ती हैं। 'जिन्हें उसने पहले से ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी ठहराया, और जिन्हें धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी है' रोमि-8:30

III

गलत शिक्षा

परमेश्वर की भलीं इच्छा और उद्देश्य, जो चुनाव की शिक्षा के बारे में पवित्र शास्त्र में हैं। परमेश्वर का कुछ विशेष लोगों को, अन्यों की अपेक्षा चुनना, जो हर सम्भव स्थिति में कार्य की व्यवस्था और दूसरी चीजों पर आधारित है। जो अपने आप में विश्वास के लिए अयोग्य है। और विश्वास की अपूर्ण आज्ञाकारिता है। जो उद्धार के लिये शर्त है। और यह परमेश्वर की अनुग्रह की इच्छा है, कि वह इसे पूर्ण आज्ञाकारिता बताते हुए इसे अनन्त जीवन के प्रतिफल के योग्य मानता है।

इस घातक गलत शिक्षा में परमेश्वर की भली इच्छा और मसीह की विशेषता उनके प्रभाव से अलग कर दी गयी, और लोग बिना फायदे के न्याय से और वचन की साफ बातों से अलग हो गये-ये शिक्षा प्रेरित की शिक्षा को गलत ठहराते है। ''जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया हमारे कामों के अनुसार नहीं वरन् अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जों मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ।'' I तिमु 1:9

IV

गलत शिक्षा

इस शिक्षा में चुनाव में विश्वास, पूर्व अपेक्षित शर्त कि मनुष्यों को प्रकृति के

स्वभाव का सही इस्तेमाल, धर्मी, अन्दाजा न लगाने वाला, नम्र और अनन्तजीवन को प्राप्त करना, ऐसा है जैसा चुनाव इन सभी बातों पर आधारित है।

इन बातों की उपस्थिति में यह शिक्षा धर्मशास्त्र में प्रेरित की शिक्षा पर प्रश्न करते हैं।

''हम सब भी पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे। शारीरिक तथा मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे, परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है अपने उस महान प्रेम के कारण जिससे उसने हम से प्रेम किया जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया, अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया जिससे कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाएं, क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, वह कार्यो के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।'' इफि-2:3-9

V

गलत शिक्षा

कुछ विशेष लोगो का उद्धार के लिये चुनाव जो अपूर्ण और अनिवार्य नही है। विश्वास, पश्चाताप, पवित्रता, परमेश्वर का भय पर आधारित है। जो अभी प्रारम्भ हुआ है, था, कुछ समय से है, परन्तु सम्पूर्ण और अनिवार्य चुनाव भी विश्वास, विश्वास की सुरक्षा, पश्चाताप, पवित्रता और परमेश्वर के भय पर आधाति है। यह अनुग्रह के योग्य है। जो चुने गये वो उनकी अपेक्षा जो चुने नहीं है, ज्यादा योग्य है। इस प्रकार विश्वास, आज्ञाकारिता पवित्रता, अच्छा जीवन, और सुरक्षा, कभी न बदलने वाले चुनाव का परिणाम नहीं है। वरन ये बातें पहले से उनमें है जिनका चुनाव होना था, इन्हें उनमें पहले पाया गया था।

यह गलत शिक्षा पूरे पवित्र शास्त्र का विरोध करती है।

''यद्यपि अब तक न तो जुड़वा जन्में थे और न कुछ बुरा या भला किया था इस अभिप्राय से कि परमेश्वर द्वारा चुनने का उद्देश्य कर्म के कारण नहीं वरन बुलाने के कारण स्थिर रहे, ...'' रोमि-9:11.12, ''वे सभी जो अनन्तजीवन के ठहराये गये थे उन्होंने विश्वास किया''-प्रे-13:48, ''तुमने मुझे नहीं वरन् मैंने तुम्हें चुना है'' ''यूह-15:16 ''यदि यह अनुग्रह से हुआ तो फिर कर्मो के आधार पर कदापि नहीं.....'' रोमि 11:6 ''प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।'' I यूह 4:10''

VI

गलत शिक्षा

गलत शिक्षा सिखाती है, कि सभी चुनाव उद्धार के लिये, न बदलने वाले नही है। परन्तु कुछ लोग जो चुने गये है। अनन्त काल के लिये नाश हो सकते है। और परमेश्वर इसे रोकना नहीं चाहता इस शिक्षा से वे परमेश्वर को बदलनेवाला और विश्वासियों के चुनाव की तसल्ली को, गलत ठहराते है। और पवित्र शास्त्र का विरोध करते हैं।

''क्योंकि झूठे नबी और झूठे मसीह उठ खड़े होंगें तथा बड़े-बड़े चिन्ह और अद्भुद काम दिखाएगें यहाँ तक की यदि सम्भव हो तो चुने हुओं को भी भरमा दे'' मत-24:24 ''जिसने मुझे भेजा है उसकी इच्छा है कि सब कुछ जो उसमें मुझे दिया है उसमें से कुछ भी न खोऊँ।'' यूह 6:39, ''जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी भी ठहराया और जिन्हें धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी।'' रोमि-3:30

VII

गलत शिक्षा सिखाती है, इस जीवन मे कोई फल नही, जागरूकता नही, ठोस चुनाव के महिमा का आश्वासन नहीं, सिवाय इसके कि यह सब कुछ बदलने वाली बातों पर आधारित है। सिर्फ इतना ही गलत नहीं है कि अनिश्चित आश्वासन की बात सिखाती है। लेकिन सतों के अनुभव को भी झूठ ठहराती है। जो प्रेरितों के साथ आनन्द में अपने चुनाव के आश्वासन और पहचान में परमेश्वर की स्तुती करतें है। जैसे मसीह ने कहा ''इस बात से आनन्दित होओं कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए है।'' लूका 10:20 जो शैतान की परीक्षा के तीरों को रोकता है। और चुनाव की जागरुकता देता है। ''परमेश्वर के चुनों हुओं पर कौन दोष लगायेगा।'' रोमि -8:33

VIII

गलत शिक्षा सिखाती है कि यह परमेश्वर की उचित इच्छा नहीं है, कि परमेश्वर ने कुछ लोगों आदम के पाप और पाप की दशा नाश में होने के छोड़ देने का निर्णय लिया, और किसी को विश्वास और उद्धार के लिये जरूरी अनुग्रह प्रदान किया। इसके विरोध में परमेश्वर का वचन स्थिर है।

''वह जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है कठोर कर देता है'' रोमि 9:18 ''तुम्हें यह प्रदान किया गया है कि स्वर्ग के राज्यों के भेदों को जानो परन्तु उन्हें नही'' -मती-13:11, ''हे पिता स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु मैं मेरी स्तुति करता हूँ कि तू ने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखी और बच्चों पर प्रकट की है। हाँ पिता क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा'' मत्ती-11:25-26,

VII

गलत शिक्षा सिखाती है, यह सिर्फ परमेश्वर की भलीं इच्छा नहीं हैं वह कुछ लोगो सुसमाचार पहुचाता हैं दूसरों को नहीं वरन, कुछ लोग अच्छे और योग्य है। उनकी अपेक्षा जिन्हें सुसमाचार नहीं दिया गया।

मूसा इस शिक्षा का विरोध करते जब उन्होने इस्त्राएल के लोगों को सम्बोधित किया ''देखो स्वर्ग और सर्वोच्च स्वर्ग तथा पृथ्वी और जो कुछ उसमें है वह सब तेरे परमेश्र, यहोवा ही का है। फिर भी यहोवा ने तेरे पूर्वजों को चाहकर उनसे प्रेम किया तथा उनके बाद सब जातियों से बढ़कर उनके वंशजों को अर्थात् तुमको चुना जैसा आज भी है।'' व्य-10:14:15,

''हे खुराजीन तुझ पर हाय हे बैतसदा तुझ पर हाय क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुममें किये गये यदि वे सूर और सैदा में किये जाते तो वे बहुत पहले टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर पश्चाताप कर लेते''। मत:11:21,

●

सिद्धान्त (शिक्षा) का दूसरा मुख्य विषय

मसीह की मृत्यु और इसके द्वारा मनुष्य का छुटकारा

लेख-1

दण्ड-जो परमेश्वर का न्याय मांगता है।

परमेश्वर पूर्णता दयालु ही नहीं पूर्णता न्याय करने वाला भी है। जैसा उसने अपने आप को शास्त्र में प्रगट किया। जो पाप हमने उसकी असीमित महीमा के विरोध में किये है। उसका न्याय, अस्थायी और अनन्त, आत्मा और शरीर पर दण्ड मांगता है। हम इस दण्ड से तब तक नही बच सकते जब तक उसका न्याय पूरा सन्तुष्ट न हो।

लेख-2

मसीह के द्वारा उसका न्याय संतुष्ट हुआ

जबकि हम उसके न्याय को पूरा नहीं कर सकते, न ही अपने आपको उसके क्रोध से बचा सकते हैं। परमेश्वर ने अपनी असीमित दया के अनुसार हमारे लिए अपने प्रिय इकलौते पुत्र को दे दिया, जो हमारे लिए पाप बना और पाप के लिए हमारी जगह क्रूस पर श्रापित हुआ, कि वह हमारे लिए परमेश्वर के न्याय को सन्तुष्ट कर सके।

लेख-3

मसीह की मृत्यु का असीमित मूल्य (महत्व)

परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु ही पूरी तरह सम्पूर्ण बलिदान है, और पाप के दण्ड को पूरा करती है। जो असीमित और इस योग्य है कि सारे संसार के पापों का प्रायश्चित कर सके।

लेख-4

असीमित मूल्य का कारण

उसकी मृत्यु इसीलिए महान मूल्य की और योग्य है, कि जिसने दु:ख उठाया- उसके लिए जरूरी था, कि वह हमारा उद्धारकर्ता हो, सिर्फ इतना ही नही कि वह सच्चा, सिद्ध, पवित्र मनुष्य हो, लेकिन परमेश्वर का इकलौता पुत्र हो और जिसका अनन्तकालीन, असीमित महत्व हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ यीशु में ये सब हैं। दूसरा कारण कि उसकी मृत्यु में परमेश्वर का क्रोध और श्राप पूरा हुआ, जिसे हमने अपने पापों के कारण अपने ऊपर लाया था।

लेख-5
सुसमाचार सभी को सुनाने की अनिवार्यता

सुसमाचार की यह प्रतिज्ञा है, कि जो क्रूस पर लटकाये गये यीशु पर विश्वास करेगा वह नाश नहीं होगा वरन् अनन्त जीवन पाएगा, पश्चाताप और विश्वास की आज्ञा के साथ ये वायदा बिना किसी भेदभाव के सभी देशों, जातियों को परमेश्वर की इच्छा में ये सुसमाचार सुनाना है।

लेख-6
अविश्वास के लिए मनुष्य जिम्मेदार

जिन्हे परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया जाता है। वे सुनकर पश्चाताप और विश्वास नहीं करते, अपने अविश्वास में नाश होगें, इसलिए नही की मसीह का क्रूस पर बलिदान सक्षम नही, वरन् इसलिए कि उन्होंने विश्वास नहीं किया।

लेख-7
विश्वास परमेश्वर का दान

जो लोग सच्चाई से विश्वास करके मसीह की मृत्यु के द्वारा पाप से और नाश होने से छुड़ाए और बचाए गये है। यह परमेश्वर का अनुग्रह है। जो उन्हें मसीह में अनन्त काल से दिया गया है। यह अधिकार वह किसी को नहीं देता।

लेख-8
यीशु की मृत्यु में बचाने (उद्धार) की क्षमता

यह पूर्णता परमेश्वर की अनुग्रहकारी इच्छा और इरादा था कि पिता अपने पुत्र की मूल्यवान मृत्यु के द्वारा अपने चुने हुओं में बचाने के कार्य को प्रभावी कर सके, जिसके द्वारा उनमें विश्वास देकर उन्हें उद्धार में ला सके।

दूसरे शब्दों में यह परमेश्वर की इच्छा थी मसीह के क्रूस के लहू के द्वारा (जो नई वाचा है) हर जाति, देश, भाषा के लोगों को जिन्हें उसने अनन्तकाल से उद्धार के लिए चुना है, बचा सके। जो पिता ने पुत्र को दिये कि वह उन्हें विश्वास दे, अपने लहु से उनके सभी पापों को चाहे वो विश्वास से पहले के हो या बाद के धोकर उन्हें अन्त कर सुरक्षित रखतें हुए तेजस्वी लोग, बिना दाग के बनाकर अपने आपके लिए प्रस्तुत करे।

लेख-9
परमेश्वर की योजना का पूरा होना

संसार की उत्पत्ति से लेकर आज तक और भविष्य में भी परमेश्वर की योजना,

उसका अनन्त प्रेम, अपने चुने हुओं के प्रति प्रभावशाली रूप से पूरा हो रहा है। नरक के द्वार व्यर्थ इसके विरुद्ध में रूकावट करने की कोशिश में है। परिणाम स्वरूप चुने हुये अपने समय में इकट्ठा होते हैं। मसीह के लहू पर स्थापित की गई कलीसिया हमेशा है। कलीसिया जिसमें प्रेम है, निरन्तर आराधना है, यहाँ और अनन्तकाल में, उद्धारकर्ता की स्तुति हो जिसने अपने जीवन को कलीसिया के लिए बलिदान कर दिया, एक दुल्हे के समान अपनी दुल्हन के लिए ।

गलत शिक्षाओं को अस्वीकाना और उनका प्रतिउत्तर

I

गलत शिक्षा सिखाती है- पिता परमेश्वर अपने पुत्र की क्रूस की मृत्यु को किसी निश्चित योजना के तहत, किसी को नाम के अनुसार बचाने के लिये नहीं दी, इसलिए यीशु की मृत्यु की महत्वता, योग्यता परिपूर्ण और सिद्ध है, तो भी जबकि किसी का उद्धार वास्तविक नहीं है। पहले से ठहराया उद्धार यथार्थ सत्य नहीं है।,

ऐसा सोचना परमेश्वर पिता की बुद्धिमता और यीशु के महत्व का अपमान है और पवित्र शास्त्र का विरोध है :-उद्धारकर्ता यीशु कहते है। ''मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ उनके लिए अपना प्राण देता हूँ।'' यूह-10:15,27, ''यदि वह अपने आपको दोष बलि करके चढ़ाए तो वह अपना वंश देखेगा, वह बहुत दिन तक जीवित रहेगा और यहोवा की भली इच्छा उसके हाथ से पूरी होगी''-यशा -53:10''

अन्त में यह गलत शिक्षा हमारे विश्वास को कम कर के आंकती है। जो हम कलीसिया के विषय में अंगीकार करते है।

II

गलत शिक्षा सिखाती है, यीशु मसीह की मृत्यु का उद्देश्य उसके लहू के द्वारा नई वाचा स्थापित करना मैलिक सत्य नही है। वरन परमेश्वर पिता का एक बार फिर मनुष्य के साथ वाचा में प्रवेशकरना है। चाहे वह अनुग्रह से या फिर कार्यो के द्वारा

यह पवित्र शास्त्र का विराध है जो सिखाती है:-

''इसलिए यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा।'' इब्रा 7:22

''मनुष्य की मृत्यु के बाद ही वसीयतनामा पक्का होता है।'' इब्रा-9:17

III

गलत शिक्षा सिखाती है-यीशु ने अपने मृत्यु के द्वारा जो सन्तुष्टि दी-उसके द्वारा

किसी को उद्धार नहीं मिलता न ही विश्वास प्रभावी ढंग से उद्धार पूरा करता है। वरन इसके द्वारा पिता को अधिकार मिला, कि वह नई तरह से लोगो से सम्बन्ध बना सके और उन पर नई बातें थोप सके। मृत्यु से, न्याय की सन्तुष्टि, मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा पर आधारित है। ये सम्भव है कि सभी उसे पूरा करे या फिर कोई भी पूरा न करे।

वे यीशु की मृत्यु को बहुत कम करके आंकते हैं, इसके द्वारा नरक से छुटकारे और इसके फायदे को नहीं मानते।

IV

गलत शिक्षा सिखाती है-कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने जो अनुग्रह की नई वाचा मनुष्य के साथ बनायी, उससे ऐसा नही है कि हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाकर विश्वास के द्वारा बचाए गये है। लेकिन परमेश्वर ने इसके द्वारा व्यवस्था के प्रति पूरी आज्ञा कारिता को हटा लिया है, और यीशु पर विश्वास और अपूर्ण अज्ञाकारिता को परिपूर्ण आज्ञाकारिता माना है, और इसे अपने अनुग्रह में अनन्तजीवन पाने योग्य ठहराया है -

ऐसी शिक्षा पवित्र शास्त्र के विरो ध में हैं। ''वे उसके अनुग्रह से ही छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में सेंत मेत धर्मी ठहराये जाते है। उसी को परमेश्वर ने उसी लहू में विश्वास के द्वारा प्रायश्चित ठहराकर खुल्लम खुल्ला प्रदर्शित किया'', रोमि-3:24-25 परमेश्वर के विरोध के साथ वे नई शिक्षा में, परमेश्वर के सामने मनुष्य के धर्मी हो जाने के विषय में गलत शिक्षा सिखाते है। जो पूरी कलीसिया के मत के खिलाफ हैं।

V

गलत शिक्षा सिखाती है-कि सभी लोग अनुग्रह की वाचा मे मेल मिलाप में स्वीकारे गये है। इसलिए मौलिक पाप के कारण कोई भी दोषी नही ठहरता और सभी मौलिक पाप के अपराध से मुक्त है।

ऐसी शिक्षा वचन से मेल नही खाती, जो सिखाती है, कि स्वभाव से हम सभी क्रोध की सन्तान हैं।

VI

गलत शिक्षा सिखाती है-अपनाने और लागू करने के विषय में परमेश्वर की इच्छा है, परमेश्वर समानता से सभी लोगों को यीशु की मृत्यु का फायदा पहुँचाना चाहता है। परन्तु, कुछ दूसरों की अपेक्षा पाप की क्षमा प्राप्त करके अनन्त जीवन पाते हैं। वह उनकी अपनी स्वतन्त्र इच्छा है। (अनुग्रह सबको समानता में दिया गया है) और

परमेश्वर की दया जो प्रभावी काम करती है, पर आधारित नहीं है। वे स्वंय अपने आप के लिए अनुग्रह पाते है। इस शिक्षा को सिखाते हुए लोगों Pelagianism का जहर देने की कोशिश करते है।

VII

गलत शिक्षा सिखाती है-यीशु मर नहीं सकता, न ही उसे मरने की आवश्यकता है, न ही ऐसे लोगों के लिए प्राण देगा जो परमेश्वर के अति प्रिय और अनन्त जीवन के लिए चुने गये है। ऐसे लोगों को यीशु की मृत्यु की जरूरत नहीं, यह शिक्षा प्रेरितों का विरोध करती हैं।

''परमेश्वर के चुने हुओं दोष कौन लगायेगा? परमेश्वर वह जो तुमको धर्मी ठहराने वाला है'' रोमि-8:33-34, ''मैं भेड़ों के लिए अपने प्राण देता '' यूह-10:15, ''मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैने तुमसे प्रेम रखा वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखों इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण दे'' यहून्ना 5:12-13, ''मसीह ने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया''-गला-2:20

●

सिद्धान्त (शिक्षा) का तीसरा और चौथा मुख्य विषय मनुष्य का पतन, परमेश्वर की ओर मुड़ना, जैसा यह दिखता है।

लेख–1

मनुष्य के स्वभाव पर पतन का प्रभाव

शुरूआत में मनुष्य परमेश्वर की समानता में बनाया गया, उसे अपने सृष्टिकर्ता और आत्मिक बातों का ज्ञान था, उसके हृदय और इच्छा में धार्मिकता थी, और उसकी भावनाओं में पवित्रता थी, मनुष्य पूरी तरह पवित्र था। लेकिन शैतान के उकसाने पर उसने अपनी स्वन्तत्र इच्छा से, अपने आपको इन सभी गुणों से गिरा/अलग कर लिया। और इनकी जगह वह अन्धकार, घोर अन्धापन, नाशत्व, बिगड़ापन, न्याय, हृदय की कठोरता जीवन में, और पूरी तरह से अपनी भावनाओं में अपवित्रता ले आया।

लेख–2

भृष्ट्रता (पाप) का फैलना

पतन के पश्चात मनुष्य ने अपने स्वभाव की सन्तान पैदा की एक पतित पुरूष पतित सन्तान लाया, परमेश्वर के न्याय से, आदम से उसके पूरे वंशज में नैतिक पतन (पाप) फैल गया, सिर्फ यीशु मसीह पाप से अलग था, इसलिए नहीं कि उसने अनुकरण नहीं किया, परन्तु उसने बदले हुए स्वभाव को आगे बढ़ाया।

लेख–3

संपूर्ण अयोग्यता

इस प्रकार सभी लोग पाप से गर्भ मे पड़ें और क्रोध की सन्तान हुए, कुछ भी भला करने की योग्यता उनमें नही थी, बुराई की तरफ झुकाव, पाप में मरे हुए, पाप के दासत्व में जकड़े थे। बिना पवित्र आत्मा के नया जीवन के अनुग्रह के, न ही उनमें इच्छा, न ही वे परमेश्वर के पास आ सकते थे, कि अपने बिगड़े स्वभाव को सुधार पाते। इस योग्य भी नही थे, कि वे अपने आपको फिर से सुधार पाते।

लेख–4

प्रकृति का प्रकाश अपर्याप्तता

मनुष्य के पतन के बाद प्रकृति का प्रकाश, मनुष्य के जीवन में जिसके द्वारा वह

परमेश्वर के बारे में, प्राकृतिक चीजों के बारे और नैतिक और अनैतिक के अन्तर के बारे में कुछ राय रखता था, और इस बात का प्रयास करता है, कि अच्छा व्यवहार रखें।

लेकिन प्रकृति का प्रकाश मनुष्य के लिये पर्याप्त नहीं था, कि वह परमेश्वर के उद्धार के ज्ञान और उसमें परिवर्तन पा सके, सत्यता तो यह है, कि उसने इसका स्वभाव और समाज के प्रति सही इस्तेमाल नहीं किया, इसके विपरीत उसने ज्योति को और बिगाड़ दिया और अधार्मिकता से इसे दबा दिया, ऐसा करने में उसने अपने आपकों परमेश्वर के सामने कोई बहाना नही दिया।

लेख–5

व्यवस्था की अपर्याप्तता

जो प्रकृति के प्रकाश के बारे में सत्य है। वही मूसा के माध्यम से परमेश्वर के द्वारा दी गई 10 आज्ञाओ के बारे में सत्य है। मनुष्य उद्धार के अनुग्रह को दस आज्ञाओं के द्वारा पा नही सकता, क्योंकि यह मनुष्य को पाप की गम्भीरता और इसके दोष के विषय मनुष्य दोषी सिद्ध करती है। लेकिन इससे बचने का कोई उपाय नहीं बताती, शरीर में कमजोर पापी को पाप के श्राप में छोड़ देती है।

लेख–6

सुसमाचार की उद्धार करने की सामर्थ

जो प्रकृति का प्रकाश और व्यवस्था नही कर सकती, परमेश्वर पवित्र अत्मा के द्वारा वचन से और मेल मिलाप की सेवा के द्वारा करते है। यही मसीह का सुसमाचार है। जिसके द्वारा उसने परमेश्वर को खुश-प्रसन्न किया, कि वह नये नियम और पुराने नियम के विश्वासियों को बचाएं।

लेख–7

सुसमाचार प्रगट करने में परमेश्वर की स्वतन्त्रता

पुराने नियम में, परमेश्वर ने अपनी इच्छा के रहस्य को सीमित लोगो पर प्रगट किया, नये नियम में (बिना किसी भेदभाव के) बहुत लोगों पर प्रगट किया। इस फर्क का कतई मतलब नहीं कि एक समय, जाति, देश के लोग दूसरे से अच्छे थे, अथवा प्रकृति के प्रकाश का बेहतर इस्तेमाल किया, परन्तु यह परमेश्वर की स्वतन्त्र भली इच्छा और प्रेम था। इसलिए जिन्होंने भरपूरी से अनुग्रह पाया है, इसके बावजूद कि इस पर उनका कोई हक नही था। उन्हें नम्रता और धन्यवाद के साथ इसे स्वीकारना है। और प्रेरितों के

साथ इसे ऊँचा उठाना है। गम्भीरता से परमेश्वर के सही न्याय को दूसरों पर जिन्होंने अनुग्रह नहीं पाया है, पर सुसमाचार प्रगट करना है।

लेख-8

सुसमाचार की गम्भीर बुलाहट

सुसमाचार के द्वारा जिन्हें बुलाया, गम्भीरता से बुलाया गया है। गम्भीर और सच्चा परमेश्वर अपने वचन में जो उसे अच्छा लगता है, बताते है, कि उसने जिन्हें बुलाया है, वे उसके पास आएंगे। गम्भीरता से उसका वायदा भी है, कि वह उन्हें आत्मा की शान्ति और अनन्त जीवन देगा, जो उसके पास आते हैं और विश्वास करते हैं।

लेख-9

सुसमाचार अस्वीकार करने के लिए मनुष्य जिम्मेदार

सुसमाचार की सेवा के द्वारा, जिन्हें बुलाया गया, परन्तु उन्होंने परिवर्तन (उद्धार) नहीं पाया इसके लिए न सुसमाचार, न मसीह जिसने सुसमाचार प्रस्तुत किया, न परमेश्वर जिसने सुसमाचार के द्वारा बुलाया और दूसरे दान भी दिये, को दोष दिया जा सकता लेकिन दोष उनका है, जो बुलाए गये पर आए नहीं ।

कुछ अपने झूठे आत्मविश्वास में जीवन के वचन पर ध्यान नहीं देते, दूसरे ध्यान देते है, परन्तु उसे हृदय से स्वीकारते नहीं, अस्थायी विश्वास के आनन्द के बाद वे वापस चले जाते है। दूसरे वचन के बीज को संसार के दुख, और जीवन के काटों से दबा देते हैं, और कोई फल नही लाते। हमारा उद्धारकर्ता बीज बोने वाले के दृष्टान्त में यही सिखाते है। Mt-13

लेख-10

परिवर्तन-परमेश्वर का कार्य

जो लोग सुसमाचार की सेवा के द्वारा, बुलाए गये आकर आत्मिक परिवर्तन में आते है। इसका श्रेय मनुष्य को नहीं जाता, यद्यपि ऐसे मनुष्य अपनी स्वतन्त्र इच्छा का इस्तेमाल करते हैं, उनके साथ जिन्हें समानता में अनुग्रह प्रदान किया गया, लेकिन इन्होंने इसे अपनाया, इसका श्रेय मनुष्य को नहीं है। (जैसा की Pelagius की गलत शिक्षा सिखाती है) आत्मिक परिवर्तन का सारा श्रेय परमेश्वर को जाता है, जिसने अनन्त काल से अपनों को मसीह में चुना, समय पर प्रभावी ढंग से बुलाया, विश्वास और पश्चाताप दिया और अन्धकार के राज्य से छुड़ाकर, उनको अपने बेटे के राज्य में लेकर आया, ताकि वे उसके अदभुद कार्यों का वर्णन कर सके, जो उन्हें अन्धकार से प्रकाश में लाया, और

अपने आप पर घमण्ड न करें वरन प्रभु में घमण्ड करे, जिसकी गवाही बार-बार पवित्र शास्त्र में प्रेरित देते है।

लेख-11

परिवर्तन में पवित्र आत्मा का कार्य

जब परमेश्वर अपनी भली इच्छा को, अपने चुने हुओं में सच्चे परिवर्तन के लिए पूरी करते है। परमेश्वर इस बात का ध्यान रखता है, सुसमाचार सिर्फ बाहर से ही उन तक नहीं पहुँचाता, वरन् पवित्र आत्मा की सामर्थ से उनके मन को प्रकाशित करता है, ताकि वे सही प्रकार से परमेश्वर की आत्मा की बातों को समझ सके, इसी पवित्र आत्मा के द्वारा मनुष्य की गहराई में पहुँचकर उनके हृदय को खोलता है नम्र करता है, और हृदय का खतना करता है, जो खतरा रहित है।

वह नये गुण उनमें भर देता है, इच्छा को जागृत कर देता है, बुराई को भली, अनिच्छा को इच्छा, आज्ञा न मानने वाले को आज्ञाकारिता की, सामर्थ से भर देता है। ताकि अच्छे वृक्ष के समान वे अच्छे कार्यो के फल पैदा कर सके।

लेख-12

पुनर्जीवन एक अलौलिक कार्य

पुनर्जीवन एक नई सृष्टि, मृत्यु सें जी उठना, वचन के अनुसार जीवित होना है, जो परमेश्वर हमारी स्वंय की मदद के बगैर हमारे जीवन में करता है। ये सिर्फ बाहरी शिक्षा और नैतिक उत्साह और ऐसे किसी माध्यम से परमेश्वर ने अपना कार्य कर दिया, और अब ये मनुष्य के हाथ में किया पुनर्जीवन और परिवर्तन अपनाए या नही ऐसा नहीं है, परन्तु यह एक अलौकिक, अद्भुद, सामर्थी और आनन्द देने वाले महान, रहस्य से भरा, जिसकी व्याख्या न की जा सके, किसी भी तरह से सामर्थ में कम नही है ऐसा वचन सिखाता है। परिणाम स्वरूप परमेश्वर जिनके जीवन में, महान कार्य करता है, निश्चित, बिना नाकाम हुआ प्रभावी नया जीवन प्राप्त कर जीवित विश्वास करते हैं। तब इच्छा नई होती है, जो न सिर्फ परमेश्वर से क्रियान्वित और उत्साहित होती, वरन् परमेश्वर के द्वारा क्रियान्वित होती है। इसीलिए मनुष्य जिसने अनुग्रह प्राप्त किया वह विश्वास और पश्चाताप करता है।

लेख-13

न समझ में आने वाला पुनर्जीवन

इस जीवन में, मनुष्य पूर्ण रूप इस कार्य को समझ नहीं सकता, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा, हृदय से विश्वास करता है, और उद्धारकर्ता से प्रेम करता है। इसी को जानता और अनुभव करता है, और इसमें सन्तुष्ट होता है।

लेख-14
वो मार्ग जिससे परमेश्वर विश्वास देता है।

इसलिए विश्वास परमेश्वर का वह उपहार है, इसलिए नहीं कि परमेश्वर ने इसे दिया कि मनुष्य चुनाव करे, वरन् यह इस प्रकार उपहार है, कि यह मनुष्य सौपा गया, भर दिया और उसमें डाल दिया गया। न ही ऐसा उपहार है, कि परमेश्वर ने जो विश्वास के योग्य है उन्हें दिया, फिर स्वीकृति के लिये इंतजार किया, कि मनुष्य अपनी इच्छा से विश्वास करे। वरन् एक ऐसा उपहार जो दोनों प्रकार से इच्छा और क्रियानवित होता है, और सभी लोगों में सभी बातों विश्वास की इच्छा, और विश्वास में विश्वास प्रदान करता है।

लेख-15
परमेश्वर के अनुग्रह का प्रति उत्तर

परमेश्वर ये अनुग्रह किसी को कर्ज के रूप में नहीं देता, परमेश्वर ये कर्ज नही देता क्योंकि मनुष्य के पास कुछ भी नहीं, जिसे वह वापस दे सके। परमेश्वर ये उन्हें देता है, जिनके पास देने के लिए कुछ नहीं, परन्तु पाप और झूठ दिया जा सकता है। इस प्रकार जो व्यक्ति इसे प्राप्त करता है, परमेश्वर को अनन्त कालीन धन्यवाद देता है। लेकिन जो इसे प्राप्त नहीं करता, इन आत्मिक बातों को नहीं समझता और अपनी पाप की स्थिति में सन्तुष्ट रहता है। और अपने आपमें मूखर्ता पूर्ण घमण्ड करता है, उसके लिए जो उसके पास नही हैं।

प्रेरितों के समान, उन लोगों से, जो अपने विश्वास का अंगीकार और अपने जीवन में सुधार लाते है, उनसे अनुग्रह में बोलते है, क्योंकि ह्दय की बातें हमारे लिए अज्ञान है। परन्तु जो अभी तक बुलाए नहीं गये है, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी है, जो है नहीं, उन्हें ऐसे बुलाते हैं जैसे वे हैं। किसी भी प्रकार से हमें घमण्ड नहीं करना हैं, कि हम उनसे बेहतर है यद्यपि हम अपने आपको उनसें अलग करते हैं।

लेख-16
पुर्नजीवन का प्रभाव

जैसे पतन के बाद मनुष्य, मनुष्य ही रहा, बुद्धि और इच्छा रही, पाप जो सारी मनुष्य जाति में फैल गया, जिसने मनुष्य को आत्मिक रीति से मार डाला, लेकिन मनुष्य जाति के स्वभाव को नहीं बदला, मनुष्य-मनुष्य ही रहा। इसी प्रकार पुनर्जीवन का अनुग्रह मनुष्य को पत्थर समझ कर कार्य नहीं करता, न ही इच्छा और इसके गुण और अनाज्ञाकारिता

की इच्छा को सामर्थ से समाप्त करता है। वरन् सामर्थ के साथ आत्मिक जागृति, चगाई और परिवर्तन प्रदान करता है। परिणाम स्वरूप जो आत्मा के प्रति सच्चे आज्ञाकारी होते हैं, उनमें विद्रोह, शरीर की इच्छा के स्थान पर, आत्मा नियंत्रण करता है ।

इसमें ही सच्चा आत्मिक सुधार और इच्छा की स्वतन्त्रता बनी रहती है। यदि अदभुद सुष्टि-कर्ता हमारे जीवन में कार्य न करता तो, मनुष्य अपनी इच्छा से पतन के बाद उठने की आशा नहीं कर सकता था। जिसके द्वारा उसने अपने आपको नाश में डाला, जबकि वह सांसारिक अच्छे कार्य भी करता।

लेख-17
परमेश्वर का पुर्नजीवन में साधनों का इस्तेमाल

परमेश्वर का सामर्थी, कार्य जिसके द्वारा वह हमें स्वभाविक जीवन देता और संभालता है। संसाधनों का इस्तेमाल करता है, जिससे परमेश्वर अपनी असीमित बुद्धि और भलाई के द्वारा अपनी सामर्थ प्रकट करता है। पहले बताए गये अद्भुद कार्य के द्वारा वह पुनर्जीवन देता है, जिसमें वह सुसमाचार का इस्तेमाल करता है, जिसे परमेश्वर ने अपनी महान बुद्धि के द्वारा पुनर्जीवन का बीज और आत्मा का भोजन ठहराया।

इसलिए प्रेरित और बाद के शिक्षको ने परमेश्वर के इस अनुग्रह को सिखाया, ताकि उसको महिमा दी जाए और हमारा घमण्ड दीनता में बदल जाए, लेकिन चेतावनी के साथ सुसमाचार के माध्यम को अनदेखा नहीं किया, वचन की सेवा में अनुशासन, और सस्कांर को बनाये रखा। आज भी प्रश्न ही नहीं बनता कि जो शिक्षा देते है। कि परमेश्वर की परीक्षा करे, उन्हें अलग करके जिसे परमेश्वर ने अपनी भली इच्छा से एक में जोड़ा है। चेतावनी के साथ प्रचार के द्वारा परमेश्वर ने हमें अनुग्रह प्रदान किया:- जितना हम अपनी जिम्मेदारी पूरी करते हैं, उतना ज्यादा परमेश्वर के कार्य के फायदों को हम देखते हैं- संसाधन और उद्धार के फल और उनके प्रभाव सिर्फ परमेश्वर के है, सारी महिमा सदा उसी की है।

गलत शिक्षाओं का विरोध

इन शिक्षाओं को समझाने के साथ Synod गलत शिक्षाओं का विरोध करती है और अस्वीकार करती है।

I

गलत शिक्षा कि मौलिक पाप पर्याप्त नहीं है, कि वह पूरी मानव जाति पर दोष सिद्ध करे और अस्थायी और स्थायी दण्ड प्रदान करें। वे प्रेरित का विरोध करते है। जिन्होने कहा- ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इसी रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी इसलिए कि सबने पाप किया,'' रोमि

5:12 ''क्योकि एक अपराध के कारण न्याय आरम्भ हुआ जिसका प्रतिफल दण्ड हुआ'' रोमि-5:16, ''क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है'' रोमि-6:23

II

गलत शिक्षा सिखाती है, कि आत्मिक वरदान, अच्छी बातें और गुण जैसे कि अच्छाई, पवित्रता, धार्मिकता, मनुष्य में नहीं रखी गयी जब परमेश्वर ने उसकी सृष्टि की, इसलिए न ही वे पतन के बाद अलग हो सकती है।

ये विरोध करती है प्रेरितो का, जो परमेश्वर की समानता-धार्मिकता और पवित्रता के सन्दर्भ में सिखाते है। वह मनुष्य में अवश्य थी इफि-4:24

III

गलत शिक्षा सिखाती है, आत्मिक मृत्यु के समय मनुष्य इच्छा से, आत्मिक वरदान अलग नहीं हुए, क्योंकि इच्छा भ्रष्ट नहीं हुयी, सिर्फ दिमाग के अन्धकारमें और भावनाओं के उदण्ड में लुप्त हो गई। एक बार ये बाधाऐं अलग कर दी जाए, तो इच्छा अपनी योग्यता क्रियान्वित कर सकती हैं, तात्पर्य कि वह अपने आप अच्छा चुन सकती है या न चुने, जो उसके सामने आते है।

ये गलत विचार स्वतन्त्र इच्छा को ऊँचा उठाती है। और वचन, यिर्मयाह को झुठलाती है। और प्रेरितों को भी- ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है'' यिर्म-17:9 ''उन्ही में हम सब भी पहिले अपने शरीर तथा मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे'' इफि-2:3

IV

गलत शिक्षा सिखाती है, कि पतित व्यक्ति (जिसनें पुर्नजीवन नही पाया) अपने पापों में पूर्णता मरा नहीं है, न ही आत्मिक अच्छाई से पूर्णता वंचित है। वरन इस योग्य है कि धार्मिकता का भूखा प्यासा हो सकता है, और टूटा और पश्चातापी हृदय प्रस्तुत कर सकता है जिसे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

ये शिक्षा पवित्रशास्त्र का सीधा विरोध करती जो सिखाता है-

''तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे-इफि-2:1, 4,5, 5, ''उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता सो निरन्तर बुरा ही होता है'' उत-6:5, 8:21, इसके अतिरिक्त, जो दु:खों से छुटकारे और जीवन के भूख प्यास रखते है और परमेश्वर को टूटा हृदय प्रस्तुत करते हैं वह पुनर्जीवित किये गये लोगों के गुण है, जो धन्य है। भज-51:17, मत्ती 5:6

V

गलत शिक्षा सिखाती है, कि भ्रष्ट और स्वाभाविक मनुष्य साधारण अनुग्रह का इस्तेमाल और पतन के बाद बचे हुओं गुणों के द्वारा, महान उद्धार का अनुग्रह और उद्धार, अन्तत: परमेश्वर को प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर सभी पर यीशु मसीह प्रगट करने की इच्छा रखता है। वह सभी को समानता में पर्याप्त संसाधन, यीशु को समझने के लिए देता है। ताकि वे विश्वास और पश्चाताप कर सके।

पवित्र शास्त्र हमेशा ही इस बात की गवाही देता है कि यह गलत है।

''वह याकूब को अपना वचन और इस्रायल को अपनी विधियाँ ओर नियम बताता है किसी ओर जाति से उसने ऐसा बर्ताव नहीं किया'' भज-147:19,20, ''उसने बीते युगों मे सभी जातियों को अपने मार्गो पर चलने दिया।'' प्रे-14:16, 16:6,7,

VI

गलत शिक्षा सिखाती है, मनुष्य के सच्चे परिवर्तन (उद्धार) में नये गुण, नया स्वभाव और दान परमेश्वर के द्वारा उसकी इच्छा में न ही डाले जाते हैं, न ही भरे जा सकते है। विश्वास जिसके द्वारा हम परिवर्तित होते है, और विश्वासी नाम पाते है परमेश्वर द्वारा दिया गया दान, व गुण नहीं है। वरन् मनुष्य स्वंय का कार्य है। इसलिये इसे उपहार नहीं कहा जा सकता, सिवाए इसके कि यह विश्वास पाने की सामर्थ है।

ये विचार कि परमेश्वर हमारे हृदय में विश्वास के नये गुण और आज्ञाकारिता, प्रेम का अनुभव नहीं डालता पवित्र शास्त्र का विरोध है।

''मैं अपनी व्यवस्था उनके मनों में डालूगा और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा'' यिर्म-31:33 ''क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल उडेलूंगा तथा सूखी भूमि पर धाराए बहाऊगां, मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरे वंशजों पर अपनी आशीष उड़ेलूंगा''-यशा-44:3, रोमि-5:5, यिर्म-31:18

VII

गलत शिक्षा सिखाती है-अनुग्रह द्वारा हमारे परिवर्तन में परमेश्वर मधुरता से हमें समझाता (उत्साहित) करता है। इसके सिवा कुछ नहीं, परमेश्वर मनुष्य के परिवर्तन में जो कार्य करता है, वह महत्वपूर्ण और मनुष्य के स्वभाव के अनुरूप है। जो परमेश्वर के उत्साह(समझाने) से होता, कुछ भी इस अनुग्रह को रोकता नहीं, जिससे स्वभाविक मनुष्य आत्मिक हो जाता है। सत्यतता से, परमेश्वर इसमें नैतिक उत्साह के अतिरिक्त इच्छा में कुछ नहीं करता, परमेश्वर का प्रभावी कार्य, जो शैतान के ऊपर विजय पाता है, इसमें सिर्फ इतना है, कि परमसेश्वर अनन्त काल के फायदे का वादा करता हैं। जबकि शैतान का वादा अस्थायी होता है।

ये शिक्षा पूर्णत (Pelagian) है और पूरे पवित्र शास्त्र का विरोध करती है। पवित्र शास्त्र सिखाता है, कि उत्साह (समझाने) के सिवा, परमेश्वर बहुत प्रभावशाली ढंग से पवित्र आत्मा के द्वारा मनुष्य के परिवर्तित होने में कार्य करता है।

''और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा और तुम्हारे भीतर एक नयी आत्मा उत्पन्न करूँगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूँगा'' यहेजकेल-36:26

VIII

गलत शिक्षा सिखाती है, मनुष्य के पुनर्जीवन मे, परमेश्वर अपनी सर्वसामर्थी शक्ति, जिससे वह सामर्थ से, बिना नाकाम हुए, मनुष्य को विश्वास और परिवर्तन प्रदान करे, इस्तेमाल नहीं करता। वरन् परमेश्वर मनुष्य के परिवर्तन के लिए सभी अनुग्रह के कार्य को पूरा कर लेता है, मनुष्य परमेश्वर की आत्मा का विरोध करता है। और अपने पुनर्जन्म को रोकता है इसलिए पुनर्जन्म हो या न हो मनुष्य की अपनी सामर्थ में होता है।

यह परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभावी कार्य को हमारे परिवर्तन से अलग करती है। परमेश्वर के कार्य को मनुष्य का कार्य बताती है। प्रेरितों की शिक्षा का विरोध करती है : ''और उसका सामर्थ्य हम विश्वास करने वालों के प्रति कितना अहम है। ये सब उसकी शक्ति के कार्य के अनुसार है।'' इफिसियों 1:19

''.........परमेश्वर तुम्हें अपनी बुलाहट के योग्य समझे तथा भलाई की हर एक इच्छा को और विश्वास के हर एक कार्य को सामर्थ्य सहित पूरा करे'' 2 यिस्सलुनीकियों 1:11 ''उसकी इश्वरीय सामर्थ ने वह सब कुछ जो जीवन और शक्ति से सम्बन्ध रखता है हमें प्रदान किया है।'' II पत-1:3

IX

गलत शिक्षा सिखाती है, कि अनुग्रह और स्वतन्त्र इच्छा एक साथ मिलकर परिवर्तन करती है, जिसमें अनुग्रह पहला नहीं है, उसका मतलब परमेश्वर प्रभावी ढंग से मनुष्य की इच्छा का मदद नहीं करता, कि वह परिवर्तन पाये, उससे पहले मनुष्य की इच्छा स्वयं को उत्साहित करती है। प्रेरितों क वचन के अनुसार शुरूआती कलीसिया इसको गलत सिद्ध कर चुकी है।

''न तो चाहने वाले पर न दौड़ धूप करने वाले पर निर्भर है। परन्तु परमेशवर की दया पर'' रोमि-9:16, ''कौन तुझे दूसरे से उत्तम समझता है। और तेरे पास क्या है जो तुझे नही मिला'' I कुरि-4:7

''क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए तुम में सक्रिय है।'' फिल-2:13

●

सिद्धान्त (शिक्षा) का पाँचवा मुख्य विषय
संतो की दृढ़ता/धैर्य

लेख-1
नया जन्म पूर्णता पाप से मुक्त नहीं होता

परमेश्वर, जिन्हें अपने उद्देश्य के लिए अपने पुत्र यीशु मसीह की संगति में बुलाता है, पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें पुनर्जीवन देता है, और उन्हें पाप के दासत्व से मुक्त करता है। यद्यपि इस जीवन में शरीर और पाप से वे पूर्णता मुक्त नहीं होते हैं।

लेख-2
कमजोरी के पापों के प्रति विश्वासी का रवैया

रोजाना कमजोरी के पाप परमेश्वर के भले लोगों को कंलकित करते है। जिससे वे अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन करे, और सहारे के लिये क्रूस पर चढ़ाए यीशु के पास आये, सामर्थ देने वाली आत्मा और भले कार्य के द्वारा पाप/शरीर के पापों को नाश करते हुए, सिद्धता की ओर बढ़े, जब तक वे शरीर की मृत्यु से छुटकारा पाकर परमेश्वर के मेम्ने के साथ स्वर्ग मे राज्य न करे।

लेख-3
विश्वासियों को परमेश्वर दृढ़ता प्रदान करता है

संसार और शैतान की परीक्षा के कारण विश्वासियों में बचे पाप बने रहते है। जो परिवर्तित हो चुके है, अपनी सामर्थ से अनुग्रह में बने नहीं रह सकते, परन्तु परमेश्वर, विश्वासयोग्यता, दया से उन्हें, अनुग्रह में सामर्थ प्रदान करता है। और प्रभावी ढंग के साथ अन्त तक सुरक्षित रखता है।

लेख-4
विश्वासियों का गम्भीर पाप में पड़ने का खतरा

यद्यपि परमेश्वर की सामर्थ विश्वासियों को सामर्थ देते हुए, दृढ़ता से अनुग्रह मे बनाए रखती है। फिर भी जो परिवर्तित/उद्धार पाये है, हम परमेश्वर के द्वारा क्रियानिवित और उत्साहित नहीं होते, फिर कुछ विशेष कार्यों में अपनी गलती से परमेश्वर के अनुग्रह से अलग नहीं होते, तब भी अपनी शरीर की लालसा से उसमें फंस जाते है। इसलिए उन्हें हमेशा सावधान रहते हुए प्रार्थना करनी है, कि वे परीक्षा में न पड़ें, यदि वे ऐसा नहीं करते तो शरीर, संसार और शैतान के हाथों में पड़कर गम्भीर पापों में फसं सकते है। और परमेश्वर की इच्छा से कभी-कभी अलग हो सकते है। ऐसे उदाहरण दाऊद और पतरस के, पवित्र शास्त्र में पाये जाते है।

लेख-5

ऐसे गम्भीर पापों का प्रभाव

ऐसे राक्षसी पापों के द्वारा वे परमेश्वर की गहरा दुःख पहुचाते ही मृत्यु के हकदार होते है, पवित्र आत्मा को आत्मा को शोकित करते है। विश्वास को त्यागते, मानसिकता को जख्मी करते है। और कभी तो अनुग्रह को ही भुला देते है। परन्तु जब सच्चे पश्चाताप के द्वारा वापस मुडते है। परमेश्वर पिता अपना तेज उन पर चमकाते है।

लेख-6

परमेश्वर का बचाने वाला दखल

परमेश्वर जो दया का धनी है, अपने कभी न बदलने वाले उद्देश्य और चुनाव के कारण अपनों से पूर्णता पवित्र आत्मा अलग नहीं करता, जबकि वे पाप में पतित होते है। और परमेश्वर उन्हें इतना भी गिरने नहीं देता, कि वे गोद लेने और धर्मी ठहराए जाने वाले अनुग्रह को नाश करके ऐसा पाप करे जो (पाप पवित्र आत्मा कें खिलाफ) मृत्यु ले आए और पूर्णता परमेश्वर के हाथों से निकलकर अनन्तकाल के लिए नाश हो जाए।

लेख-7

पश्चाताप का नवीनीकरण

पहले स्थान पर परमेश्वर ऐसे सन्तों को बचाता है, जब वे उसके नाश न होने वालो बीज, अनुग्रह जिससे उनका पुनर्जन्म हुआ है, से गिरते है।

दूसरा-परमेश्वर अपनी आत्मा और वचन के द्वारा प्रभावी ढंग से उन्हें पश्चाताप कराता है। ताकि वे हह्रय से जो पाप उन्होंने किया है, उसके लिए दुःखी हो और विश्वास और पश्चातापी हृदय से, बिचइए (यीशु) के लहू के द्वारा क्षमा प्राप्त करें, मेल कराने वाले परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव करे, विश्वास से उसकी दया की महिमा करे, और आगे से डरते और काँपते हुए, अपने उद्धार के कार्यों को पूरा करे।

लेख-8

सुरक्षा/बचाने की निश्चयता

अपनी विशेषता और सामर्थ से नही, परन्तु परमेश्वर की दया से, वे ने तो विश्वास और अनुग्रह से वचिंत होते हैं, न ही अपने पापों में बने रहकर नाश होते है। मनुष्य के अनुसार सिर्फ यह आसानी से नहीं होगा वरन बिना सन्देह के ऐसा ही होगा। परन्तु परमेश्वर के अनुसार किसी भी सम्भवता से ऐसा नही हो सकता, उसकी योजना बदल नहीं सकती, उसके वायदे नाकाम नहीं हो सकते, उसकी भली इच्छा से बुलाया जाना बदल नहीं सकता, यीशु की विशेषता उसका हमारे लिए प्रार्थना करना और सुरक्षित रखना, बेअसर नहीं हो सकता, और पवित्र आत्मा की मोहर अस्वीकृत और मिटाई नहीं जा सकती।

लेख-9

सुरक्षित रहने का आश्वासन

जिन्हें उद्धार के लिए चुना गया और सच्चे विश्वासियों को सुरक्षित रखने के बारे में विश्वासी अपने आप इस आश्वासन को अपने विश्वास के स्तर के अनुसार आश्वस्त हो सकते हैं। जिसके द्वारा वे विश्वास करते हैं, कि वह हमेशा कलीसिया के सच्चे और जीवित सदस्य है। और उनके पास पापों की क्षमा और अनन्त जीवन है।

लेख-10

आश्वासन का आधार

यह आश्वासन वचन से बाहर, किसी व्यक्तिगत प्रकाशन से नहीं मिलता, वरन् परमेश्वर के वायदों पर विश्वास से, जिसे परमेश्वर ने हमारी तसल्ली के लिए अपने वचन में बहुतायत से प्रगट किया है, ''पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की संतान और उत्तराधिकारी हैं।'' रोमि-8:16,17 और चेतना की गंभीर और पवित्र खोज, और अच्छे कार्यो से यह आश्वासन प्राप्त होता है, यदि परमेश्वर के चुने हुए इस संसार में इस बात से आश्वस्त नहीं होते हैं, कि विजय उनकी है, और वे अनन्त महिमा के भागीदार हैं तो वे सबसे दुःखी लोग होंगे।

लेख-11

इस आश्वासन के प्रति सन्देह

यद्यपि पवित्र शास्त्र सिखाता है, परीक्षा और शरीर की इच्छाओं के सन्देह के समय विश्वासियों को सन्तुष्ट और आश्वस्त रहना है, परन्तु वे विश्वास के आश्वासन और धैर्य की सत्यता का पूर्णता अनुभव नही कर पातें। परन्तु हर सहारे का परमेश्वर कहता है- ''तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है..... परन्तु परीक्षा के साथ बचने का उपाय भी करेगा।'' Cor-10:13 और पवित्र अत्मा के द्वारा उनका आश्वासन पुनर्जाग्रत करता है।

लेख-12

आश्वासन, सदाचारिता का प्रेरक है

परमेश्वर की दृढ़ता का आश्वासन, सच्चे विश्वासी में, घमण्ड और आत्म आश्वस्त नहीं देता, वरन् दीनता, सन्तान के समान आदर का भाव, सच्ची सदाचारिता, कठिन परिस्थिति में धैर्य, प्रार्थना, हमेशा क्रूस उठाने और सच्चाई का अंगीकार करने और परमेश्वर

पर आधारित आनन्द का सच्चा आधार है, इन बातों पर मनन करना, गम्भीर और लगातार धन्यवादी बने रहने और अच्छे कार्य करने में प्रेरणादायक है, जैसा पवित्र शास्त्र में संतों के उदाहरण से सीखते है।

लेख-13

आश्वासन असावधानी को प्रेरित नहीं करता

परमेश्वर द्वारा नया किया गया दृढता का आत्मविश्वास, किसी भी तरह अनैतिकता और सदाचारिता से मुहँ मोड़ना नहीं सिखाता है, उन्हें जो पतन के बाद वापस अपने पैरो पर खड़े हुए है। वरन् ये सिखाते है, गम्भीरता से परमेश्वर के मार्गो पर चले, जो उसने पहले से हमारे लिए तैयार किये है। इस मार्ग पर चलने के द्वारा परमेश्वर के दृढता प्रदान करने वालें आश्वासन में बने रहे। परमेश्वर की ओर सदाचार से देखना, जीवन से उत्तम है, लेकिन इससे मुंह मोड़ना मृत्यु से कड़वा है। ऐसा न हो कि परमेश्वर की भलाई को गाली (घूर) देकर, कही परमेश्वर अपना मुँह उनसे फेर ले, क्योंकि वे फिर पवित्रआत्मा को शोकित करके पाप में गिर जाते है।

लेख-14

परमेश्वर का दृढता/धैर्य प्रदान करने में, संसाधनों का इस्तेमाल

परमेश्वर को ये अच्छा लगता है, कि सुसमाचार प्रचार के द्वारा, सुसमाचार के सुनने और पढ़ने और इस पर मनन करने वचन को प्राथमिकता, इसकी चेतावनी और वायदे और संस्कार पूरा करने, लेने के द्वारा परमेश्वर अपने अनुग्रह के कार्य को पूरा करता है।

लेख-15

परमेश्वर की दृढ़ता प्रदान करने की शिक्षा के प्रति विभिन्न विरोधाभास वाले प्रति उत्तर

सच्चे विश्वासी की दृढ़ता और इसके आश्वासन की शिक्षा, ऐसी शिक्षा है, जिसे परमेश्वर ने अपनी महिमा और अपने लोगो की सात्वना के लिए पवित्र शास्त्र में प्रगट किया है। जिसे वह विश्वासियों के ह्दय में स्थापित करता है, जिसे शरीर नहीं समझ सकता, शैतान नफरत करता है, और संसार गलत मानता है यह गलत शिक्षा का आक्रमण है और अज्ञानता और दिखावा है।

परन्तु यीशु की दुल्हन, कलीसिया इस शिक्षा से प्रेम करती है, और इसका रक्षा करती है, यह एक बहूमूल्य खजाने के समान है। और परमेश्वर, जिसके विरोध में कोई योजना कार्य नहीं कर सकती, न कोई शक्ति ठहर सकती है। परमेश्वर इस बात को पक्का करते हैं कि कलीसिया इसमें निरन्तर बनी रहे। सारा आदर सारी महिमा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को मिले।

गलत शिक्षा का विरोध

संतों की दृढता की शिक्षा के साथ Synod गलत शिक्षा को अस्वीकार करती है।

I

गलत शिक्षा सिखाती है। कि विश्वासीयों की दृढता, चुनाव व उपहार में नहीं जो यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा मिलता है। परन्तु नई वाचा की शर्त है। जिस लोग पहले कहते थे, अनिवार्य चुनाव और बचाव/न्याय मनुष्य की स्वतन्त्रत इच्छा द्वारा पूरे होते है।

परमेश्वर का वचन सिखाता है चुनाव के बाद दृढता मिलती है जो यीशु मसीह की मृत्यु, जी उठने और प्रार्थना के द्वारा हमें परमेश्वर प्रदान करता है ''जो चुने हुए थे, और शेष कठोर कर दिये गये''-रोमि-11:7,

''वह जिसने अपने पुत्र को भी नही रख छोड़ा परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया तो वह उसके साथ हमें सब कुछ उदारता से क्यों न देगा, परमेश्वर के चुने हुओं पर कौन दोष लगाएगा। परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहराता है वह कौन है जो दोष लगाएगा? मसीह यीशु ही है जो मरा हा वरन वह मृतकों में से जिलाया गया जो परमेश्वर के दाहिनी ओर है और हमारे लिए निवेदन भी करता है कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगाा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव या अंकाल या नंगाई, या जोखिम या तलवार?'' रोमि-8:32-35

II

गलत शिक्षा सिखाती है, परमेश्वर विश्वासियों को दृढ़ता के लिए पर्याप्त सामर्थ देता है और इस सामर्थ को उनमे सुरक्षित रखता है। वे सभी बातें और माध्यम जो अनिवार्य है, जो विश्वास को दृढ़ता प्रदान करते हैं, परमेश्वर खुशी से विश्वास सुरक्षित रखने के लिए इस्तेमाल करता है, परन्तु तब यह मनुष्य की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह दृढ़ता प्राप्त करे या न करें।

यह शिक्षा Pelagian की है, यद्यपि यह मनुष्य को आजा़द करती है, लेकिन यह उनके सम्मान, धर्म का दुरूपयोग हैं। यह सुसमाचार कि शिक्षा के विरूद्ध में है। सुसमाचार विश्वासियों के घमण्ड को दूर करके सारी महिमा परमेश्वर के अनुग्रह को प्रदान करता है। यह प्रेरितों के शिक्षा का भी विरोध है ''जो तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो'' I कुरि-1:8

III

गलत शिक्षा जो सिखाती है, जिन्होंने सच्चाई से विश्वास किया है और नया जन्म

प्राप्त किया है, सिर्फ धर्मी ठहराहे जाने वाले विश्वास, अनुग्रह और उद्धार खोते ही नहीं वरन् सत्यता यह है, कि कई बार इसे खोकर अनन्तकाल के विनाश में चले जाते है। यह शिक्षा पवित्र शास्त्र की शिक्षा, धार्मिकता और नया जीवन देने वाला अनुग्रह और मसीह की निरन्तर सुरक्षा का विरोध करती है। और यीशु के वचनों का भी विरोध करती है। रोमि-5:8, I यूह-3:9, यूह-10:28-29

IV

गलत शिक्षा सिखाती है, जिन्होंने सच्चा विश्वास किया और नया जन्म प्राप्त किया है। पवित्र आत्मा के विरोध में पाप कर सकते हैं, जो पाप मृत्यु ले आता है। इसी विषय के लिए प्रेरित यूहन्ना कहते जो ऐसा पाप करते हैं, जो मृत्यु ले आता उनके लिए कोई प्रार्थना नहीं है। यूह 5:16:17, उसके तुरन्त बाद कहते है। 5:18 में ''हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता''

V

गलत शिक्षा सिखाती है बिना विशेष प्रकाशन के कोई भी इस जीवन में भविष्य की सुरक्षा की दृढता नहीं पा सकता। इस शिक्षा के द्वारा इस जीवन में सच्चे विश्वासियों से उनकी शान्ति छीन ली जाती है और Romanisists की सन्देह वाली शिक्षा फिर से कलीसिया में स्थान पाती है। पवित्र शास्त्र में बहुत जगह यह शिक्षा साफ है, कि आश्वासन विशेष और अप्रकृतिक प्रकाशन से नहीं वरन परमेशवर की विशेष चिन्ह जो परमेश्वर की सन्तान में होते है और परमेश्वर के विश्वास योग्य वायदे से है। प्रेरित पौलुस इस बारे में लिखते है, ''न कोई सजी हुयी वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में अलग कर सकेंगी।'' रोमि-8:39

''जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है वह परमेश्वर मे बना रहता है और वह उसमे और इसी से अर्थात उस आत्मा से जिसे उसने हमे दिया है हम जानते है कि वह हममें बना रहता है'' I यहून्ना-3:24

VI

गलत शिक्षा सिखाती है, कि सुरक्षा, दृढ़ता और उद्धार की शिक्षा अपने स्वभाव और गुणों में शरीर (Flesh) में एक निदांजनक (नशा) है। और सदाचारिता, अच्छी नैतिकता, प्रार्थना और पवित्र कार्यो के लिए नुकसानदायक है। इसलिए इस पर सन्देह करना सही है।

ऐसे लोग परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभावी कार्य और जीवन में कार्यरत पवित्र आत्मा के कार्यों से अनजान है। और प्रेरित यहून्ना की शिक्षा पवित्र शास्त्र में झूठलाते (विरोध करते) हैं।

''प्रियो हम परमेश्वर की सन्तान हैं और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे पर हम यह जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके सदृश्य होंगे क्योंकि हम उसकों ठीक वैसा ही देखगें जैसा वह है। प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा रखता है वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है जैसा कि वह पवित्र है।'' I यूहन्ना 3:23

यहाँ तक कि वे पुराने और नये नियम मे संतो के उदाहरण को अस्वीकारते है, जिन्होने सुरक्षा की दृढ़ता और उद्धार पर विश्वास करते हुए भी निरन्तर प्रार्थना और सदचारिता का जीवन बिताया।

VII

गलत शिक्षा सिखाती है जो लोग थोडे समय के लिए विश्वास करते है उनका विश्वास उद्वार और धर्म ठहराये जाने वाले विश्वास से अलग नहीं है, सिर्फ इनमें समय का फर्क है। यीशु मसीह स्वयं Mt-13:20 और लूका 8:13 में इस अन्तर को साफ समझातें है। थोडे समय के विश्वासी और सच्चे विश्वासी में, पहला, बीज को पथरीली भूमि पर स्वीकारता है, सच्चा विश्वासी अच्छी भूमि पर, पहले में जड़ नहीं फूटती दूसरा अच्छी जड़ पाता है पहला कोई फल नही लाता दूसरा लगातार, धैर्य से कई अनुपात में फल ले आता है।

VIII

गलत शिक्षा सिखाती है, कि ऐसा हो सकता है, एक व्यक्ति अपने पहले जीवन को खोकर, एक बार फिर से (कई बार ऐसा होता) पुनर्जन्म प्राप्त करें।

यह शिक्षा परमेश्वर के नाश न होने वाले बीज के स्वभाव जिससे हमारा पुनर्जन्म हुआ है, नकारती है।

यह प्रेरित पतरस की गवाही के विरोध में है :

''क्योंकि तुमने नाशवान नही, वरन् अविनाशी बीज से अर्थात परमेश्वर के जीवित तथा अटल वचन द्वारा नया जन्म प्राप्त किया है। I पत-1:23

IX

गलत शिक्षा सिखाती है कि यीशु मसीह ने विश्वासीयों की समाप्त न होने वाली सुरक्षा की दृढता के लिए कहीं भी प्रार्थना नहीं की, वे यीशु मसीह का विरोध करते है जिसने कहा ''परन्तु मैं ने तेरे लिए प्रार्थना की है कि तेरा विश्वास चला न जाए''-लूका-22:32 और यूहन्ना के सुसमाचार में यूहन्ना कहते है Jn-17, यीशु ने सिर्फ प्रेरितों के लिए ही नहीं, वरन् जो उनके संदेश के द्वारा विश्वास करेंगे, के लिये भी प्रार्थना की।

''हे पवित्र पिता अपने उस नाम से जो तूने मुझे दिया इनकी रक्षा कर'' V

11, मैं ''तुझसे यह विनती नही करता कि तू उन्हें संसार में से उठा ले परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख'' यहून्ना-17:11, 15

निष्कर्ष
झूठे आरोप का खण्डन

उन पाँच लेखों जिन पर नीदरलैण्ड में मतभेद है यह उन विषयों में सीधी, सरलता से समझ आनेवाली शिक्षा की व्याख्या है। साथ ही उन गलत शिक्षाओं का खण्डन है, जिन्होंने कुछ समय के लिए (डच) कलीसिया में गड़बड़ी पैदा की।

Synod-इस व्याख्या और खण्डन को परमेश्वर के वचन से सही बताते हुए, संशोधित (Reformed) परिवर्तित कलीसियाओं के अंगीकार से सहमत है।

इसलिये यह साफ है, जो इसे नहीं स्वीकारते अथवा नकारते है। लोगो के सामने इसे मानने के लिए कोई सच्चाई, निष्पक्षता और इसके प्रति लगाव स्नेह नही दिखाते:- वो मानते है:- परिवर्तित कलीसियों की पहले से ठहराये जाने और इससे सम्बन्धित शिक्षा- अपने स्वभाव और प्रकार में लोगों के दिमाग, विचार को सदाचारिता और धर्म से अलग करती है। यह शरीर पाप और शैतान की नशे की दवा है और शैतान का मजबूत गढ़ है जहाँ वह लोगों का इन्तजार करता है, बहुतों को जखमी, और निराश और आत्म आश्वासन के तीरों से छलनी करता है।

यह शिक्षा परमेश्वर को पाप का कर्ता, अन्यायी क्रूर शासक, पाखण्डी और refurbished stoiusm, Manichcism, libertinism, और Mohammedanism, बनाती है उदासीन, अस्थिरता रखनेवाला, कटटरपंथी और मर्जी पर चलनेवाला बनाती है।

Predestination यह शिक्षा लोगो का सांसारिक, आत्मआश्वस्त बनाती है, क्योंकि यह उद्धार के प्रति आश्वस्त करती, इसलिए वे गम्भीर, बुरे घृणित पाप कर सकते है।

दूसरी तरफ उद्धार के लिए कोई भी पाप बीच में नहीं आता और न ही काई अच्छे कार्य चाहे वे पवित्रता के सभी कार्यो को पूर्ण सच्चाई से करे।

इस शिक्षा का अर्थ हैं, कि परमेश्वर न अपनी इच्छा से नाम मात्र और अयोग्य पसन्द के द्वारा पहले से ठहराया और बनाया, बिना पाप को ध्यान में रखे संसार के बड़े हिस्से (बहुत लोगो) को अनन्तकाल के लिए दोषी सिद्ध किया, जैसे कि चुनाव विश्वास का कारण और अच्छे काम का श्रोत है। वैसे ही परमेश्वर का अस्वीकरण अविश्वास और दुराचारिता का कारण है। विश्वासियों के छोटे बच्चे अपनी पवितत्रता में माँ के दूध से

अलग कर, क्रूरता से नरक में डाले गये, कि न तो यीशु और न ही उनका बपतिस्मा, न बपतिस्में के समय कलीसीया की प्रार्थना उनके कुछ काम आती है।

और इस प्रकार के दूसरे कलकिंत करने वाले दोषों की गलत शिक्षाओं को, नयी की गयी कलीसिया अस्वीकार करती है, वरन पूरे हृदय से उनका इन्कार आलोचना करती है। इसलिए Dort के Synod-यीशु मसीह के नाम में, उन सभी से जो समर्पण के साथ हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम लेती है। कि नयी की गई कलीसिया के विश्वास का निणर्य, गलत दोष (शिक्षा) जो यहाँ-वहाँ से ली गई है, न ही पुराने और नये लोगों के व्यकितग कथन जो ज्यादातर संदर्भ से अलग और गलतरीती से बदल कर गलत अर्थ से प्रस्तुत किये गये है, के आधार पर करे। परन्तु इसका निर्णय-कलीसियाओं की आधारित, अंगीकरण और परम्परागत शिक्षा की वर्तमान व्याख्या जो पूरे Synod के सभी लोगों की आम सहमति से लागू की गई है, के आधार पर करे।

Synod सच्चाई/गम्भीरता से गलत शिक्षकों को चेतावनी देता है, कि वे जो गलत (गवाही) शिक्षा बहुत सी कलीसियों और उनके विश्वास के अंगीकार के विरोध में देकर कमज़ोर की मानसिकता परेशान करता है, और सच्ची कलीसिया के विरोध में बहुतों के हृदय (दिमाग) को पूर्वाग्रह से ग्रसित करता, परमेश्वर का न्याय निर्णय उनकी इन्तजार देखता है।

अब ये Synod अपने साथी, मसीह के सुसमाचार के सेवको से निवेदन करता है, कि इस शिक्षा को, परमेश्वर के भय और आदर के साथ शैक्षिक संस्थानों और लिखित में लागू करे, परमेश्वर के नाम की महिमा, पवित्रता के जीवन और चिन्तित आत्माओं के आराम, शान्ति के लिए, और विश्वास के अनुरूप, पवित्र शास्त्र के अनुसार सोचें और बात करें। और ऐसी बातों/शिक्षा से अलग रहे जो पवित्रशास्त्र की सच्चाई से हटकर अनुचित ढंग से झूठ गढ़कर इस बात की कोशिश करती है, कि नवीन कलीसियाओं की शिक्षाओं को दूर कर दे और गलत दोष/शिक्षा इसके विरोध में लाए/लगाए।

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जो परमेश्वर के दाहिने बैठता है और मनुष्य को वरदान देता है। हमें सच्चाई से पवित्र करे, जो गलती करते है, उन्हें सच्चाई से अवगत कराये। उनके मुंह बन्द करे जो, सच्ची शिक्षाओं पर गलत दोष मढ़ते हैं। और विश्वास योग्य सेवकों को वचन और समझ और पहचान की आत्मा प्रदान करें। और जो सब वे कहे उससे परमेश्वर की महिमा हो और सुननेवाले तरक्की/उन्नति करें।

Heldelberg Catechism, Belgic Confession और Canons of Dort की समानता

यह अंगीकार की समानता Heidelberg Catechism की सारणी पर, इस उद्देश्य से आधारित है, कि सिद्धान्तों से सम्बन्धित कथन, अन्य अंगीकारों में आसानी से ढूंढे जा सके, तथापि सावधानी बरतनी है क्योंकि हर एक अंगीकार का विशेष कार्य है, क्योंकि यह कलीसियाओं की विभिन्न समयों की विभिन्न जरुरतों के अनुसार तैयार किये गये हैं। हर एक अंगीकार की आत्मनिर्भरता और सच्चाई को सुरक्षित रखते हुए अंगीकारों की समानता का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

Heidelberg Catechism		Belgic Confession	Canons of Dort
(Lord's Day)	(Question & Answer)	(Article)	(RE = Rejection of Errors)
I	I	–	I, 12–14; RE I, 6, 7; III/IV, 11; V, 8–12; RE V, 5
	2	–	I, I–4
II	3	–	III/IV, 5, 6
	4	–	–
	5	14, 15	III/IV, 3–6; V, 2, 3
III	6	14	III/IV, 1
	7	14, 15	I, 1; III/IV, 1–4
	8	14, 15, 24	III/IV, 3, 4
IV	9	14, 15, 16	I, 1; III/IV, 1
	10	15, 37	I, 4; II, 1; III/IV, 1
	11	16, 17, 20	I, 1–4; II, 1, 2
V	12	20	II, 1
	13	14	II, 2; III/IV, 1–4
	14	–	–
	15	19	II, 1–4
VI	16	18, 19, 20, 21	II, 1–4
	17	19	II, 1–4
	18	10, 18, 19, 20, 21	II, 1–4
	19	2, 3, 4, 5, 6, 7	I, 3; II, 5; III/IV, 6–8
VII	20	22	I, 1–5; II, 5–7; III/IV, 6
	21	23, 24	III/IV, 9–14; RE III/IV, 6
	22	7	I, 3; II, 5; III/IV, 6–8
	23	9	–
VIII	24	8, 9	–
	25	8, 9	–
IX	26	12, 13	–
X	27	13	–
	28	12, 13	–
XI	29	21, 22	II, 3
	30	21, 22, 24	II, 5, RE II, 3–6
XII	31	21, 26	–
	32	–	V, 1, 2
XIII	33	10, 18, 19	–
	34	–	–
XIV	35	18, 19, 26	–
	36	18, 19	–
XV	37	20, 21	II, 2–4
	38	21	–
	39	20, 21	II, 2–4
XVI	40	20, 21	II, 3, 4; RE II, 7
	41	–	–
	42	–	–
	43	–	II, 8
	44	21	II, 4
XVII	45	20	RE, V, 1
XVIII	46	26	–
	47	19, 26	–
	48	19, 26	–
	49	26	–
XIX	50	26	–
	51	–	V, 1–15
	52	37	–
XX	53	11, 24	III/IV, 11, 12 RE III/IV, 5–8; V, 6, 7
XXI	54	16, 27, 28, 29	I, 1–18; II, 1–9; V, 9
	55	28, 30, 31	–
	56	22, 23	II, 7, 8; V, 5

XXII	57	37	–
	58	37	–
XXIII	59	21, 22, 23	II, 7, 8
	60	21, 22, 23	II, 7, 8
	61	21, 22, 23	II, 7, 8; RE, II, 4
XXIV	62	23	II, I; III/IV, 3–6; RE III/IV, 4, 5
	63	24	–
	64	24	III/IV, II; V, 12, 13; RE V, 6
XXV	65	24, 33	III/IV, 17; RE III/IV, 7–9; V, 14
	66	33	–
	67	33	–
	68	33	–
XXVI	69	15, 34	–
	70	15, 34	–
	71	15, 34	–
XXVII	72	34	–
	73	34	–
	74	15, 34	1, 17
XXVIII	75	35	–
	76	35	–
	77	–	–
XXIX	78	35	–
	79	35	–
XXX	80	35	–
	81	35	–
	82	35	–
XXXI	83	29, 30, 32	–
	84	29, 32	–
	85	29, 32	–
XXXII	86	24	III/IV, 11, 12; V, 10, 12
	87	24	–
XXXIII	88	24	III/IV, 11, 12; V, 5, 7
	89	24	III/IV, 11, 12; V, 5, 7
	90	24	III/IV, 11, 12; V, 5, 7
	81	24, 25	–
XXXIV	92	–	–
	93	–	–

	94	1	–
	95	1	–
XXXV	96	32	–
	97	–	–
	98	7	III/IV, 17; V, 14
XXXVI	99	–	–
	100	–	–
XXXVII	101	36	–
	102	–	–
XXXVIII	103	–	V, 14
XXXIX	104	36	–
XL	105	36	–
	106	–	–
	107	–	–
XLI	108	–	–
	109	–	–
XLII	110	–	–
	111	–	–
XLIII	112	–	–
XLIV	113	–	–
	114	24, 29	V, 4
	115	25	III/IV, 17
XLV	116	–	–
	117	–	–
	118	–	–
	119	–	–
XLVI	120	12, 13, 36	–
	121	13	–
XLVII	122	2, 7	–
XLVIII	123	36, 37	–
XLIV	124	12, 24	III/IV, 11, 16
L	125	13	–
LI	126	15, 21, 22, 23	II, 7
LI	126	15, 21, 22, 23	II, 7
LII	127	26	V, 6, 8
	128	26	–
	129	–	–

Blank

THE
WESTMINSTER
STANDARDS

विश्वास का अंगीकार (**The Westminister Confession of faith**)

विस्तृत प्रश्नावली (**The Larger Catechism**)

संक्षिप्त प्रश्नावली (**The Shorter Catechism**)

Blank

विश्वास का अंगीकार

अध्याय-1

पवित्र शास्त्र

1. यद्यपि प्रकृति का प्रकाश(ज्ञान), सृष्टि और परमेश्वर की इस पर कृपा दृष्टि, परमेश्वर की भलाई, बुद्धि और सामर्थ को प्रगट करती है। ताकि मनुष्य के पास कोई बहाना न हो फिर भी ये सब परमेश्वर के पूर्ण ज्ञान, उसकी इच्छा, जो उद्धार के लिए ज़रूरी है। पर्याप्त नहीं है। इसलिए परमेश्वर का उचित भला लगा, कि अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरीके से अपने आप को प्रगट करें और अपनी इच्छा अपनी कलीसिया पर प्रगट करे, और बाद में बेहतर प्रकारों से, सच्चाई को सुरक्षित रखते हुए इसका प्रचार प्रसार करें, और चर्च को शरीर/पाप की भ्रष्टता पर, स्थापित और शैतान और संसार की दुर्भावना पर कलीसिया को सहारा प्रदान करे। और इसे वचन में लिखें जो पवित्र शास्त्र को अत्यन्त महत्वपूर्ण बनाता है। इस प्रकार से परमेश्वर की अपनी इच्छा को प्रगट करने का तरीका उसके लोगो के लिए अब समाप्त हो गया है।
2. पवित्र शास्त्र अथवा लिखा हुआ परमेश्वर का वचन अब पवित्र शास्त्र के पुराने और नये नियम में पाया जाता है। जो अग्रलिखित है।

पुराना नियम

उत्पत्ति	II इतिहास	दानिय्येल
निगर्मन	एज्रा	होशे
लैव्यव्यवस्था	नहेम्याह	योएल
गिनती	एस्तेर	आमोस
व्यवस्थाविवरण	अय्यूब	ओबद्याह
यहोशु	भजन संहिता	योना
न्यायायिओ	नीतिवचन	मीका
रूत	समोपदेशक	नहूम
I शमूएल	श्रेष्ठगीत	हबक्कूक
II शमूएल	यशायाह	सपन्याह
I राजा	यिर्मयाह	हाग्गै
II राजा	विलापगीत	जकर्याह
I इतिहास	यहेजकेल	मलाकी

नया नियम

मत्ती	इफिसियों	इब्रानियों
मरकुस	फिलिप्पियों	याकूब
लूका	कुलिस्सियों	I पतरस
यूहन्ना	I थिस्सलुनीकियों	II पतरस
प्रेरितों के काम	II थिस्सलुनीकियों	I यूहन्ना
रोमियों	I तिमुथियुस	II यूहन्ना
I कुरिन्थियो	II तिमुथियुस	III यूहन्ना
II कुरिन्थियो	तीतुस	यहूदा
गलातियो	फिलेमोन	प्रकाशितवाक्य

ये सभी जो परमेश्वर की प्रेरणा से पवित्र शास्त्र में दिये गये है विश्वास और जीवन के लिए परमेश्वर के नियम है।

3. वे पुस्तक जिन्हें (Apocrypha)कहा जाता हैं, परमेश्वर द्वारा प्रेरित नहीं हैं और पवित्र शास्त्र के सिद्धान्तों का हिस्सा नहीं है, इसलिए परमेश्वर की कलीसिया में उनकी मान्यता नहीं है, न ही किसी प्रकार से उन्हें किसी भी मनुष्य के लेखों में उनकी मान्यता है।

4. पवित्र शास्त्र पर और इसके अधिकार जिस पर विश्वास करते हुए इसकी आज्ञा माननी चाहिए, क्योंकि यह किसी मनुष्य की गवाही और कलीसिया की गवाही पर निर्भर नहीं करता, वरन् पूर्णता से परमेश्वर पर जो इसका लेखक है, और अपने आप में सच्चा है। इसलिए इसे स्वीकार करना है, क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है।

5. हम कलीसिया की गवाही के द्वारा पवित्र शास्त्र के प्रति उच्च आदर भाव के लिए उत्साहित, प्रेरित हो सकते है। और स्वर्ग की बातों के बारे में, सिद्धान्तों के गुणो, भव्यता का आकार, सभी भागों की सहमति, परमेश्वर की सारी महिमा, इसे पूर्णता में समझाना, वचन को मनुष्य के उद्धार के लिए एकमात्र मार्ग बनाता है। और इसके अलावा अतुल्य उत्तमता, और सम्पूर्ण, सिद्धता पूर्णता में इस बात का प्रमाण है, कि यह परमेश्वर का वचन है। और उसके ईश्वरीय अधिकार और अटल सत्यता के प्रति हमारी धारणा, विश्वास और आश्वासन का प्रतिरोध नहीं करता, यह पवित्र आत्मा का (अन्दरुनी) कार्य है पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन से और साथ, में हमारे हृदय में गवाही देने का कार्य करता है।

6. परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना (सलाह), जो उसकी अपनी महिमा, मनुष्य के उद्धार, विश्वास और जीवन के लिए जरूरी है, पवित्र शास्त्र मे प्रगट कर दी गई है। अथवा पवित्र शास्त्र से जरूरी और भले परिणाम के लिए पवित्र शास्त्र से निष्कर्ष निकाला जा सकता है। जिसमें अब कभी भी कुछ जोड़ा नहीं जा सकता, न ही आत्मा के

प्रकाशन और न ही मनुष्यों की परम्परओं के द्वारा, पवित्रशास्त्र सम्पूर्ण है। परन्तु इस बात को स्वीकार करते है कि परमेश्वर की आत्मा के द्वारा पवित्र शास्त्र में प्रकट की गई बातों का हृदय में प्रकाशन (समझ) जो उद्धार की समझ के लिए जरूरी है, होता है।

और कुछ विशेष स्थितियों में परमेश्वर की आराधना और कलीसिया को चलाने की बाते, जो मनुष्य और समाज, समुदाय में सामान्य है, प्रकृति के प्रकाश के द्वारा और मसीह समझ के द्वारा, वचन के सामान्य नियमों के अनुसार जिन्हें हमेशा पूरा करते हुए, करना है।

7. पवित्र शास्त्र में सभी बातें समान रीति से साफ नहीं है, न ही समान रीति से सबको समझ आती है। परन्तु जो बातें विश्वास और उद्धार के लिए जानना जरूरी है, को साफ प्रकार से पवित्र शास्त्र में, एक अथवा दूसरी जगह प्रस्तुत किया गया है। जिन्हें सिर्फ जानना ही नहीं वरन न जानना भी, जरूरी साधन के इस्तेमाल के लिए, ताकि उनकी पर्याप्त समझ प्राप्त की जा सके।

8. पुराना नियम इब्रानी भाषा में (जो उस समय परमेश्वर के लोगों की मातृभाषा थी) और नया नियम यूनानी भाषा में, (जो लिखने के समय देशों के लिए सामान्य भाषा थी) परमेशवर की आत्मा के द्वारा प्रेरित, प्रोत्साहित और उसकी स्वयं की सुरक्षा के द्वारा प्रत्येक समय (काल), में सुरक्षित रखा गया है, इसलिए प्रमाणित और विश्वनीय है। धर्मो के सभी विवादों में कलीसिया ही उसे पुनविचार के लिए (चुनौती) अथा प्रार्थना कर सकती है।

परन्तु क्योंकि ये भाषाए (इब्रानी, युनानी) परमेश्वर के सभी लोगों को नहीं मालूम/आती, जिन्हें वचन पढ़ने का अधिकार, पवित्र शास्त्र में रूचि है। जिन्हें आज्ञा दी गई है, कि परमेश्वर के भय में इसे पढ़े और समझे, इसलिए इन्हें सभी देशों की भाषा में अनुवाद किया गया, जहाँ से वे (विश्वासी) सम्बन्ध रखते है। ताकि परमेश्वर का वचन भरपूरी से सभी में (विश्वासियों)स्थान पा सके। और वे परमेश्वर की आराध ना ग्रहण योग्य तरीके से कर सकें। और पवित्र शास्त्र के धैर्य ओर सहारा में आशा पा सके।

9. परमेश्वर के वचन को अनुवाद(भाषान्तरण), व्याख्या करने सबसे उचित नियम पवित्र शास्त्र है। इसलिए जब शास्त्र के किसी भाग के सच्चाई, अथवा अर्थ के बारे में कोई प्रश्न हो तो, इसे पवित्र शास्त्र के दूसरे भाग में जहाँ इसे ज्यादा अच्छी तरह समझााया गया ढूंढ़ना (खोजना) जरूरी है।

10. सर्वोच्च न्यायधीश पवित्र आत्मा है जो धर्म की सभी विवादों का फैसला, समिति के आदेश, पुराने लेखकों के विचार, मनुष्य के सिद्धान्त, व्यक्तिगत आत्माओं की परीक्षा, और उनकी बाते जिन पर हमें भरोसा है का निर्धारण करता है जो पवित्र शास्त्र के द्वारा बातें करता है।